वार्षिक रिपोर्ट 2023-24

SADBHAVNA TRUST

समुदायों को सशक्त बनाने एवं गरीमा के संरक्षण हेतु हमारा प्रयास

एक संकल्पना,आज हकीकत!

तीन दशकों से भी अधिक समय से टीम-सद्भावना हाशिये पर रहने वाले ज़रूरतमंद समुदायों की किशोरियों एवं महिलाओं को सशक्त बनाने एवं उन्हें संविधानिक रूप से जागरूक करने और उनके सामाजिक-आर्थिक गरिमा को संरक्षण करने का कार्य कर रहे हैं।

सद्भावना ट्रस्ट, 1990 में पंजीकृत, ज़रूरतमंद, असुरक्षित समुदायों को सशक्त बनाने के लिए समर्पित है। संस्था सकारात्मक सोच और नवप्रवर्तन को प्राथमिकता देती है। ट्रस्ट एक नारीवादी विचारधारा आधारित एक महिला नेतृत्व संगठन है जो राष्ट्रीय स्तर पर 1990 से और उत्तर प्रदेश में 2009 से सामुदायिक विकास और सशक्तिकरण जैसे बिन्दुओं पर सक्रिय रूप से अपनी अहम भूमिका निभा रही है। संस्था लखनऊ के अल्प सुविधा प्राप्त क्षेत्र एवं वंचित समुदायों की किशोरियों और महिलाओं के साथ काम करती है।

हमारा यादगार सफ़र...

वाकई, हमारी उल्लेखनीय यात्रा पर विचार करना अविश्वसनीय है। यह सफ़र पिछले 34 सालों से शुरू हुआ है। शुरूआत से ही हमारा 'विज़न' बिलकुल स्पष्ट है, जो खासकर महिलाओं और लड़कियों के लिए एक ऐसे समाज निर्माण की इच्छा रखता है, जो कि संविधानिक मूल्यों पर आधारित हो, हिंसा और भेदभाव से मुक्त हो, जो समता एवं समानता की गवाही देता हो और जो समाज न्याय (सामाजिक, आर्थिक, मानसिक और लैंगिक) पर आधारित हो।

"सद्भावना" इस संकल्पना का बीज दक्षिण दिल्ली में काम कर रहे युवा सामाजिक कार्यकर्ताओं के एक समूह द्वारा बोया गया जो समता और समानता सिद्धांतो के अनुयायी है। तब से लेकर अब तक हम सभी साथियों ने एकजुटता से संगठित होकर बहुत लगन से इस संकल्पना का बीज से पौधा और फिर पौधे से ज़रुरतमंदों को बिना भेदभाव और बराबरी से छाया दे ऐसा सुंदर और मज़बूत वृक्ष बनाने की पहल की है।

इस परिवर्तनकारी यात्रा की शुरुआत लखनऊ (उत्तर प्रदेश) से हुई। हालांकि सफ़र आसान नहीं था, चूँकि जितनी इस शहर की खूबसूरती हमें आकर्षित करती है उतनी ही यहाँ की चुनौतियाँ व्यापक हैं। गहरी रुढ़िवादी सोच और साथ ही किसी भी स्थायी आजीविका की संभावना दूर तक ना होने से शोषण और गरीबी से परिपूर्ण समाज में महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य एवं शिक्षा पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव हमने प्रत्यक्ष रूप से न केवल देखा है बल्कि झेला है, क्योंकि हम "सद्भावना टीम" इन्हीं सामाजिक चुनौतियों का सामना करके उन हालातों से आगे बढ़कर आज मौजूदा चुनौतियों को जड़ से मिटाने की कोशिश में जुटे हैं।

उन शुरूआती दिनों से अब तक हमने काफी दूरी तय की है। अब हमारे पास एक ठोस जानकारी एवं डेटा है जिसके चलते हम केवल समस्याओं पर नहीं बल्कि समस्या निवारण पर ज़ोर देते हैं। हमने 'सशक्तिकरण' मार्ग को अपनाया है जो किशोरियों एवं महिलाओं के सामाजिक स्तर के परिवर्तन और गरिमा के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता आया है।

हमारा अटूट विश्वास है कि महिला और समाज में मौजूद अन्य पहचानें (जेंडर) भी समाज के महत्वपूर्ण घटक हैं। और इनका समाज एवं राष्ट्र के विकास में बहुमूल्य योगदान है, किन्तु रुढ़िवादी सामाजिक संरचना एवं निम्न सोच के चलते समाज से मिलते असमानता, घृणा और भेदभाव की वजह से महिलाओं एवं अन्य पहचानों की सामाजिक मुख्यधारा से विलुप्ति होती जा रही है। साथ ही वे सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक दृष्टी से पिछड़े और असुरक्षित रह रहे हैं।

खासकर कोरोना महामारी के उपरांत हमने समाज की स्थिति और भी गंभीर होते देखी है। हम समाज की ऐसी हर ज़हरीली सोच पर कठोर निगरानी रखते हैं जो सामाजिक परिवर्तन और विकास में मुश्किलों का निर्माण करती है। इसलिए हमारा प्रयास इन घटकों को मुख्यधारा में लाना है, क्योंकि यदि हम इन्हें मुख्यधारा में लायें फिर हमारे परिकल्पना के मुताबिक जिस समाज निर्माण की हमें आस है ऐसे समाज का निर्माण होना निश्चित है।

हमारे कार्यक्रमों में अनोखा लचीलापन है। हमने हमारे कार्य के दौरान आवश्यकता विश्लेषण के अनुसार सामुदायिक ज़रुरतों और दुविधाओं को केंद्र में रखकर प्रत्येक कार्यक्रमों का नियोजन किया है।
हमारा उद्देश्य हर बार विशेष पहल करने का रहा है। 2019 में 'लखनऊ लीडर्स' (सामुदायिक डिजिटल प्लेटफार्म की एक सक्रिय शुरुआत), 'मोहल्ला पकवान' (समुदाय में विशेष पद्धतियों एवं कम सामग्री से बने पकवानों का प्रदर्शन), वर्ष 2021-22 में रिसर्च डॉक्यूमेंट्री (डिजिटल स्पेस में महिलाएं), कोविड-19 में शादियाँ रिसर्च (कोरोना महामारी से समुदाय में हुए विपरीत परिणामों का संशोधन), साथ ही वर्ष 2023 में 'मोहल्ला रेडियो' (कम्युनिटी पॉडकास्ट), और रिसर्च डॉक्यूमेंट्री (राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं का स्थान एवं निवेश) जैसी अद्भुत कार्यक्रमों की पहल की है, जिससे समुदाय की लड़कियां एवं महिलाएं हमारे साथ जुड़ी रहती है। और यह सभी मंच उन्हें मनोरंजन व खुशियाँ प्रदान करते हैं, तथा उनमें छुपे हुनर से उनको रूबरू करवाते हैं।

इस पूरे वर्ष में हमारा केंद्रीय ज़ोर हमारी टीम की मज़बूती पर रहा है। टीम के सुदृढ़ीकरण हेतु क्षमता-विकास एवं नेतृत्व-विकास के अवसरों को बढ़ावा दिया गया, साथ ही विभिन्न संस्थानों से मेल-जोल बढ़ाते हुए कामकाज की परस्पर सक्रिय समझ बनाने को महत्त्व दिया है। नेटवर्किंग जैसे विकल्प को टीम की मज़बूती और आत्मविश्वास बढ़ाने हेतु अपनाया है।

साथ ही हमने साथियों में एकजुटता बरक़रार रखने की दृष्टि से भावनात्मक लचीलेपन एवं मानसिक स्वास्थ्य को खासकर महत्व दिया है। इससे हमें पूरे वर्ष में घटीं विभिन्न दुविधाओं से उभरने में विशेष राहत मिली और सामुदायिक एवं व्यक्तिगत विकास, आत्मविश्वास, साझेदारी, सहकार्य, सहानुभूति आदि में आश्चर्यजनक परिवर्तन दिखा है।

हमारी यात्रा सामुदायिक साझेदारी को बढ़ावा देने से चिन्हित है। हम वर्ष 2024-25 की ओर जागरूकता पूर्वक अपना कदम बढ़ा रहे हैं। साथ ही हम अपनी यात्रा के अगले चरण तक पहुँचने के लिए रणनीतिक मानसिकता के साथ प्रतिबद्ध हैं।

हमारा दृष्टिकोण

नारीवादी - हम समुदाय में महिला और किशोरियों से संबंधित मुद्दों और विषयों में नारीवादी भाव को प्राथमिकता देते हैं।

महिला नेतृत्व - हम महिलाओं को नेतृत्व में लाने की ज़रूरत को समझते हैं। तथा हमारा प्रयास महिलाओं में क्षमताओं का विकास कर उन्हें समाज की मुख्यधारा में नेतृत्व की भूमिका में लाना है।

समावेशी भाव - हम ऐसे समाज की अपेक्षा करते हैं जहाँ समाज में स्थित सभी पहचानों (जेंडर) के लिए समावेशी भाव की समक्षता हो।

साझेदारी - हमारा मज़बूत विश्वास है कि, साझेदारी से समाज में सभी अपेक्षित परिवर्तन मुमकिन है। यह हमें न केवल समाज में परिवर्तन कारकों (factors) से जोड़े रखती है, बल्कि साझेदारी से परस्पर भाईचारे को बढ़ावा देती है।

विज़न

महिलाओं एवं किशोरियों के लिए एक मानवीय, टिकाऊ, समतामूलक और न्यायपूर्ण समाज का निर्माण करना है।

मिशन

- सकारात्मक विकास और नवप्रवर्तन की दिशा में कार्य करना

- ज़रूरतमंद, असुरक्षित/वंचित समूहों की महिलाओं एवं लड़कियों को विभिन्न पहल के ज़रिये नेतृत्व में लाना

- महिलाओं और किशोरियों का सशक्तिकरण करके उन्हें आत्मनिर्भर बनाना

- एक समावेशी समाज की अपेक्षा करना

सिद्धांत

- पारदर्शीता
- समानुभूत
- लचीलापन
- गोपनीयता
- आदर
- आशावादी

सद्भावना की अब तक पहुँच

हमने अब तक कार्यक्रम और मोहल्ला मंच के माध्यम से 5000+ किशोरियों को संस्था से जोड़ा है।

हमारी कार्यक्रम एवं महिला फोरम के तहत 3000+ महिलाओं तक पहुँच बनी है।

हमारी अब तक कुल 5 स्कूलों और 2 कॉलेजों के साथ सहभागिता द्वारा युवा छात्रों एवं अध्यापकों के साथ 500+ पहुँच बनी है।

हमने रोज़गार सहायता द्वारा अब तक 100+ परिवारों को आर्थिक रूप से सक्षम बनाया है।

अब तक हम 30+ राज्य और राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं के साथ पहुँच बनाने में सफल रहे हैं। साथ ही 10+ अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं से भी सम्पर्क बना है।

"टोटो अवार्ड" के तहत 2024 में संस्था से जुड़ी कम्युनिटी लीडर ख़ुशी की फिल्म "ख़ुशी की रौशनी" को सम्मानित किया गया।

“पॉइंट ऑफ़ व्यू” के तहत ‘स्टोरी बीइंग्स फिल्म फेस्टिवल्स’ में संस्था द्वारा निर्मित फिल्मों की राष्ट्रीय स्तर पर स्क्रीनिंग हुई।

संस्था द्वारा चलित कार्यक्रम

किशोरियों एवं महिलाओं को सशक्त बनाने की दिशा में हमारी पहल

हमने लखनऊ, उत्तर प्रदेश से शुरुआत की है, हम हर साल शहर के कुछ ऐसे क्षेत्र और समुदायों को चुनते हैं, जो सुविधा और विकास के मामले में औरों की तुलना में बेहद पिछड़े और असुरक्षित हैं। जब हम समाज में सशक्तिकरण और नेतृत्व-विकास को प्रात्यक्षिक रूप में रखने की बात करते हैं उस वक़्त समुदाय में मौजूद कठिनाइयों और समस्याओं से रूबरू हो पाते है, जिससे हमें हमारे समुदायों की ज़रूरतों को समझने की दृष्टि मिलती है।

2009 से हम समुदाय से जुड़ी सभी समस्याओं की जानकारी का संग्रह करने में सक्षम हैं। यदि हम बदलाव की अपेक्षा करते हैं, तो समुदाय का हमसे सलंग्न होना महत्वपूर्ण है और इसी ज़रूरत को समझते हुए हम हमारे सभी कार्यक्रमों की संरचना करते हैं। यही वजह है कि, महिला एवं किशोरियाँ काफी सरलता से हमसे सलंग्न होकर सीख पाती हैं। मौजूदा हालातों को बदलने की पहल करते हुए वह भविष्य में आगे बढ़ पाती हैं। इसलिए हम लखनऊ की किशोरियों एवं महिलाओं को हमारे कार्यक्रमों के माध्यम से आवश्यक कौशल प्रदान कर उनमें क्षमता-विकास को बढ़ावा देते हुए उन्हें नेतृत्व की भूमिका में देखने की साधारण अपेक्षा करते हैं।

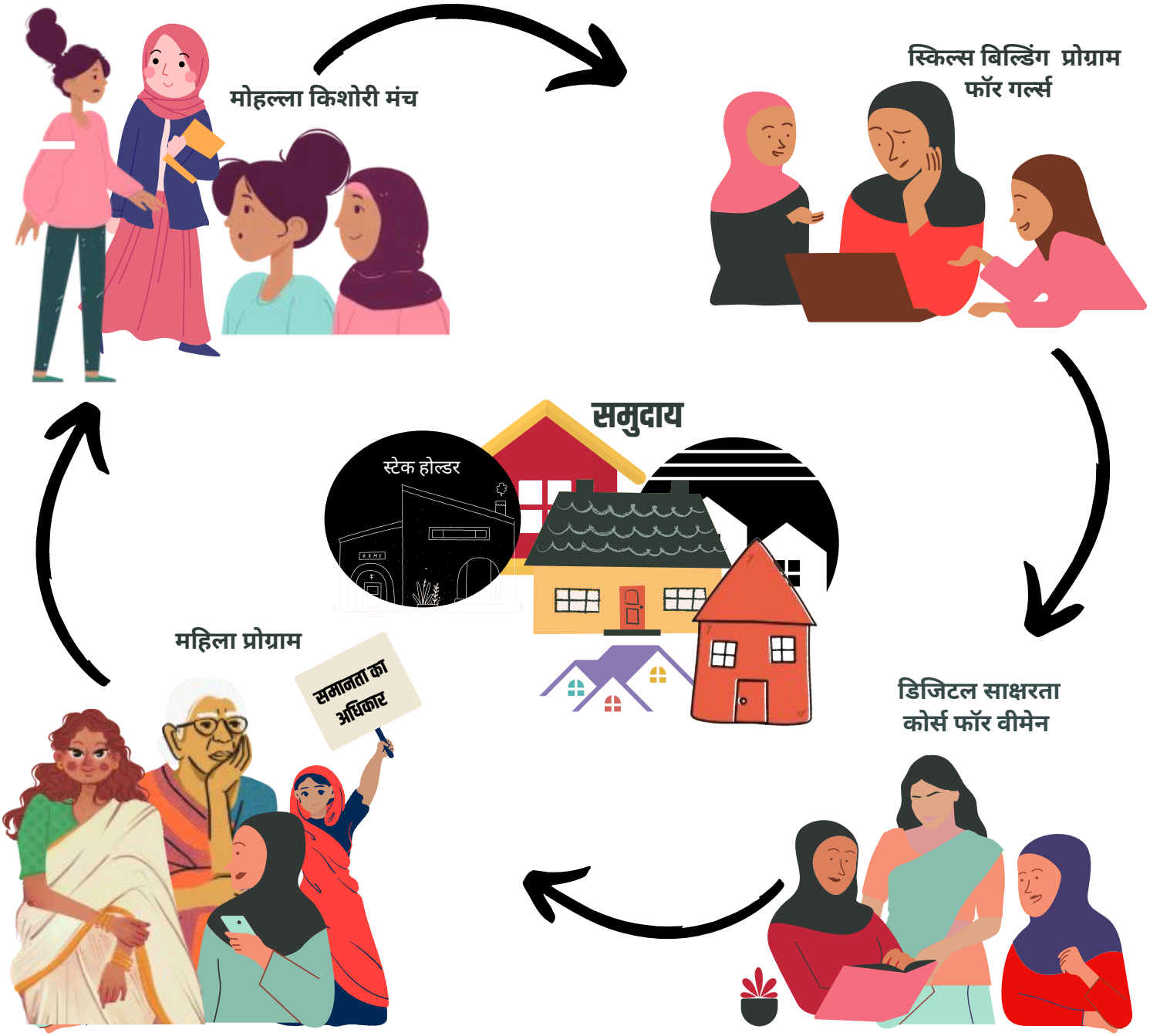

किशोरी एवं युवा महिला नेतृत्व विकास कार्यक्रम 2023-2024

"किशोरी एवं युवा महिला नेतृत्व विकास कार्यक्रम" के तहत हमारा प्रयास है कि, लखनऊ के ज़रूरतमंद और हाशिये पर रहने वाले समुदायों की लड़कियों एवं युवा महिलाओं की सामाजिक तथा पारिवारिक मुद्दों पर सकारात्मक समझ बने। इस प्रकार वह स्वयं अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होकर सामाजिक कठिनाइयों से निपटने का कौशल सीखें एवं अपने जीवन से जुड़े मुद्दों पर सकारात्मक सोच के साथ निर्णय ले सकें।

इस कार्यक्रम के निम्न तीन प्रमुख चरण हैं।

1. किशोरी मोहल्ला मंच (गर्ल्स फोरम)
2. नए कौशल नई राहें (जॉब स्किल्स प्रोग्राम)
3. बेख़ौफ़ नज़रे (यंग वीमेन लीडरशिप प्रोग्राम)

1. किशोरी मोहल्ला मंच (गर्ल्स फोरम) -

यह संस्था का बहुत महत्वपूर्ण कार्यक्रम है, जो किशोरी एवं युवा महिलाओं के लिए संचालित है। यह 'मोहल्ला मंच' नाम से जाना जाता है, चूँकि इसका संचालन अपने-अपने मोहल्लों से होता है। यहाँ समुदाय की किशोरियां एवं महिलाएं पितृसत्तात्मक व्यवस्था, लिंग आधारित भेदभाव एवं हिंसा, यौन उत्पीड़न और उससे सम्बंधित कानून, शिक्षा, माहवारी प्रबंधन, शादी एवं रिश्ते, संवैधानिक अधिकार, आजीविका व रोज़गार जैसे सामाजिक एवं आर्थिक विषयों पर मिलकर जानकारी लेकर साझी समझ बनाती हैं। साथ ही समाज में मौजूद रुढ़िवादी और परंपरागत बाधाओं से निपटने के लिए न केवल स्वयं सक्षम होती हैं, बल्कि एक-दूसरे को सहकार्य करती हैं। इस तरह मज़ेदार गतिविधियों के द्वारा सीखने-सिखाने का कारवां चलता है।

चुनौतियाँ एवं प्रभाव

- हम खासकर तब बदलाव और सशक्तिकरण को महसूस कर पाते हैं, जब नेतृत्व की भूमिका को सक्रियतापूर्वक सँभालते हुए हमारी अनुपस्थिति में भी समुदाय की नेत्री (लीडर) द्वारा मंच जीवित रहते हैं और बेहतर तरीके से चलते हैं।

- किसी भी मंच के निर्माण में बेहद मुश्किलें आती हैं, क्योंकि परिवार में महिला-लड़कियों पर विशेष रोक-टोक होती है। इन हालातों में उनका घर से बाहर निकल पाना लगभग ना मुमकिन है। किशोरियों का संस्था से जुड़ाव करना बेहद कठिन कार्य है, किन्तु जुड़ाव के उपरांत किशोरियों के साथ ही उनके परिवारजनों का भी विश्वास जीतने में हम सफल हो पाते हैं यह अनुभव काफी सुकून देता हैं।

- विकलांग सामाजिक मानसिकता के चलते लड़कियों की कम उम्र में शादी होना, पढ़ाई का छूट जाना एवं इच्छाओं को टूटते देखना जहाँ सामान्य है, वहीं मंच के ज़रिये बनी विभिन्न मुद्दों की समझ से इन हालातों से एक आकर्षक बातचीत के माध्यम से निपटने की कोशिश एवं हुनर वे रख पाती हैं।

मंच यह माध्यम है जहाँ किशोरियां शिक्षा एवं जीविका(career) के महत्व को गहराई से समझ पाती हैं तथा रुकावटों के बावजूद वे ऊर्जा के साथ उनको पाने की कोशिश करती हैं।

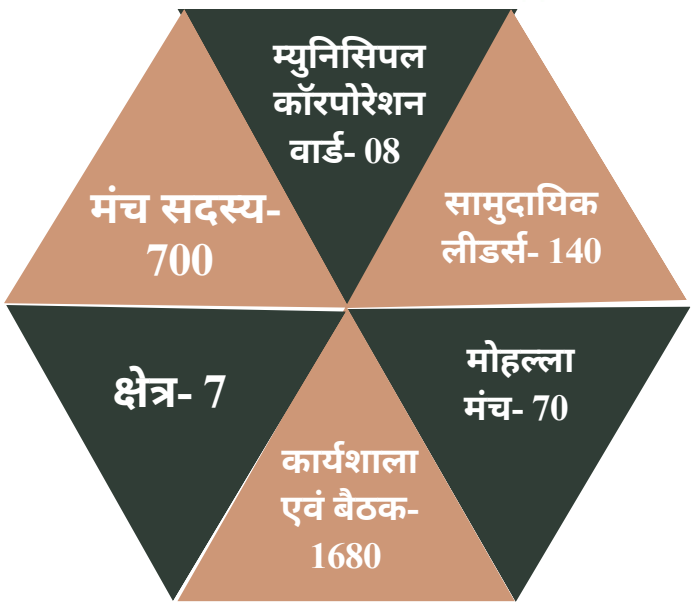

यह तो बस शुरुआत है...

मेरा नाम सानिया (बदला हुआ नाम) है। मैं लखनऊ शहर के अकबर नगर क्षेत्र में रहती हूँ। मेरे जिंदगी,समाज,पहचान आदि मुद्दों पर कोई विचार नहीं थे, क्योंकि मुझे इन विषयों की समझ ही नहीं थी। फिर मुझे **"सद्भावना ट्रस्ट"** के बारे में और उनके कार्यक्रमों के बारे में पता चला। इस तरह मैं मोहल्ला किशोरी मंच से जुड़ी जहाँ पर समाज से जुड़े हर मुद्दों पर बात होती है। मुझे लगातार मंच जाना अच्छा लगता है।

मैं आज मेरे अन्दर काफी बदलाव देखती हूँ, जैसे- मुझे जिस भी काम की ज़िम्मेदारी मिलती है, उसे मैं ज़िम्मेदारी के साथ करती हूँ। "मरियम अप्पी" (संस्था साथी) के ना आने पर भी मंच मीटिंग करती हूँ। मुझे मंच के अलावा सद्भावना ट्रस्ट से सीखने के कई सारे मौके मिले हैं, जैसे - अलग-अलग वर्कशॉप (फोटोग्राफी,सोशल मीडिया आदि) में शामिल होने के अवसर मिले हैं।

लोगों को देखने का मेरा नज़रिया बहुत बदला है। जिस तरह समाज दूसरों को देखता-समझता है, वैसे ही में भी देखती थी, लेकिन अब मैं हर एक चीज़ को एक अलग लेन्स से देखती हूँ।

जब मैंने सुना कि 'अकबर नगर' जल्द ही टूट जाएगा और बड़ी कगार में लोग बेघर हो जाएँगे तब, एक लीडर होने के नाते मैंने सभी के साथ एकजुटता से अकबर नगर को बचाने के लिए आवाज़ उठाई। मीडिया, सभासद, सोशल मीडिया, वकील इन तक हर तरह से अपनी आवाज़ पहुंचाई।

यह तो बस शुरुआत है...

“मैं भावना (बदला हुआ नाम), क्रेज़ी गर्ल मंच से हूँ। मेरी उम्र 17 साल है। मेरे माता पिता नहीं हैं, मैं अपने भाई के साथ ही रहती हूँ। मंच में जुड़ने से पहले मैं हर काम अपने भाई की मर्ज़ी और दबाव से करती थी। मेरा भाई मुझे कहीं आने-जाने की आज़ादी नहीं देता था। वो बस मुझ पर रोक-टोक करता था। वो यहाँ तक कहता था “हाईस्कूल के बाद पढ़ाई नही करनी है तुम्हारी शादी करवा देंगें।”

मैंने मेरी शादी के लिए इनकार जताया तब मेरे भाई को महसूस हुआ की मैं बोलने लगी हूँ तो, उसने मुझे मंच में जाने से मना कर दिया। क्योंकि मंच से जुड़ने के बाद मैंने अपने हक़ के लिए बात करना सीखा है। इसी सीख से मैंने अपने भाई से बातचीत करके उसे कन्वेंस किया, और भाई को समझाया कि मैं अपनी जिंदगी में कुछ करना चाहती हूँ और इसमें आपको मेरा साथ देना चाहिए। मैं पढ़ाई में भी काफी अच्छी हूँ इसलिए मेरा भाई मान गया। अब मैं मंच में भी आती हूँ और खुश भी रहती हूँ।”

3. बेख़ौफ़ नज़रे (यंग वीमेन लीडरशिप प्रोग्राम)

"बेखौफ़ नज़रे कार्यक्रम" युवा महिलाओं को पितृसत्तात्मक बाधाओं और जेंडर गैर बराबरी जैसे मुद्दों पर डटकर चुनौती देने एवं उनसे निपटने के अग्रिम कौशल प्रदान करता है। कार्यक्रम का आशय वंचित समुदायों में रहने वाली युवा महिलाओं में नेतृत्व कौशल और क्षमता विकास करना है, जिसके चलते कार्यक्रम से जुड़ी युवा महिलाएं एक लीडर (नेत्री) के रूप में उभरकर आगे बढ़ सकें।

जेंडर आधारित बंटवारा एवं गैर बराबरी जीवन में कैसे डिजिटल विभाजन को प्रोत्साहित करता है? ऐसी विभिन्न समस्याओं (समुदायिक/राष्ट्रीय स्तर) को एक असामान्य दृष्टि से देखने और समझने की कोशिश लीडर महिलाएं कर पाती हैं, जिससे वे सामाजिक गतिविधियों में बदलाव लाने में सक्षम होती हैं।
महिलाएं तकनीकी (IT) कौशलों को सीखकर अपने रोज़मर्रा की जिंदगी में चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होकर अपने लिए हिंसामुक्त जीवन, आजीविका और आर्थिक आज़ादी के अवसरों को सुनिश्चित करती हैं। वे अपनी पहचान एक सामुदायिक लीडर एवं रोल मॉडल के रूप में बनाती हैं, जो कि दूसरी महिलाओं के लिए प्रेरणा स्त्रोत होते हैं।

TOT कार्यक्रम की प्रमुख उपलब्धियां और प्रभाव

16 सामुदायिक लीडर्स को "नज़रिया निर्माण" (Perspective Building) और बेसिक कंप्यूटर विषय में TOT ट्रेनिंग द्वारा कौशल एवं क्षमता विकास करने में हम सफ़ल रहे।

- 8 लीडर्स ने विभिन्न मुद्दों पर ट्रेनिंग देने की भूमिका निभाई
- लीडर्स एक ट्रेनर होने के कौशलों, गुणों, एवं महत्त्व को समझ पाईं
- एक आकर्षक वक्ता के रूप ट्रेनिंग देने के विभिन्न तरीकों पर समझ बनाई
- सीखें हुए कौशलों को प्रभावशाली तरीकों से कैसे समुदाय में ले जा सकते है? इन विधिओं को समझा
- प्रतिभागियों ने सेशन प्लानिंग, डिजाइनिंग करना एवं संसाधनों के योग्य इस्तेमाल के बारे में जाना
- सेशन फैसिलिटेशन के दरम्यान वॉइस मॉड्यूलेशन और बॉडी लैंग्वेज के बारे में सीखा

इस वर्ष में समुदाय की युवा लीडर्स को अग्रिम कौशलों द्वारा उनकी कार्य सक्रियता बढ़ाने हेतु "ट्रेनिंग ऑफ़ ट्रेनर" (TOT) का नियोजन किया गया। जिसमे उनके प्रभावी संचार (Effective Communication) एवं तकनीक सम्बंधित कौशलों पर विशेष ज़ोर दिया गया।

डरना नही कुछ करना है

"मेरा नाम सुमन (बदला हुआ नाम) है, मेरी उम्र 33 साल है। मैं लखनऊ शहर के जनता नगरी क्षेत्र में रहती हूँ। मेरे परिवार में एक भाई, मेरे दो बच्चे और माँ हैं। मुझे वक़ालत की पढ़ाई करनी थी लेकिन घर के हालात ठीक ना होने से मेरी केवल बी.ए तक की पढ़ाई हो सकी, और तुरंत मेरी शादी कर दी गयी।

शादी के कुछ दिनों बाद ही ससुराल वाले मुझे मेरे पति के भरोसे अकेले छोड़कर चले गए, चूँकि मेरे पति को पारिवारिक ज़िम्मेदारियों को उठाने की कोई समझ नही थी और ना ही वे कुछ कमाते थे। इसके बाद मुझें पति द्वारा कई हिंसाओं (भूखा रखना,मारपीट, ताने, तनाव देना आदि) को सहना पड़ा। इन सारी समस्याओं के चलते मैं कुछ ही समय ससुराल में रह सकी और अपने मायके लौट आयी। उस दौरान मैं गर्भवती थी। मेरे लम्बे सब्र (एक बेटे की माँ होने तक) के बावजूद भी ससुराल वालों में कोई बदलाव न आया। पति भी अपनी हरकतों से बाज़ नहीं आया। कुछ समय बाद मोहल्ले के लोगो ने घरवालों से मुझे दुबारा ससुराल भेजने का सुझाव दिया और मुझे वापस ससुराल जाना पड़ा। मैं फिर से गर्भवती रही उस दौरान मेरे पति ने मुझे फिर से मारपीटाई शुरू कर दी। मैं बहुत परेशान थी उन दिनों, और एक दिन हताश होकर मैं मेरा ढाई साल का बेटा और पेट के बच्चे सहित अपने मायके वापस आ गयी क्योंकि मेरी तबियत काफी ख़राब हो चुकी थी।

अब मैं पिछले 6 साल से अपने मायके में ही रह रही हूँ। इन सालों में ना तो मेरे पति ना ही ससुराल वालों ने कभी मुझे या मेरे बच्चों को पलटकर देखा। इन सालों में मेरा "सद्भावना ट्रस्ट" से परिचय हुआ और मैं "बेख़ौफ़ नज़रे कार्यक्रम" का हिस्सा बनी। मैंने निडर होकर मेरे पति द्वारा मुझ पर हुई हिंसाओं के खिलाफ घरेलू हिंसा का मुकदमा दर्ज किया। अब तकरीबन 1 साल हो चूका है मुझे केस के आदेश अनुसार 'गुज़ारा भत्ता' मिल रहा है। मैं खुद भी सद्भावना ट्रस्ट में ज़रूरतमंद महिलाओं को क़ानूनी सुरक्षा प्रदान करने के कार्य में जुड़ी हूँ। मुझे मेरे कार्य में बेहद संतुष्टि मिलता है।"

2. नए कौशल नईं राहें कार्यक्रम (जॉब स्किल्स प्रोग्राम)

इस वर्ष हमने हमारे विज़न को ध्यान में रखते हुए कैम्पबेल रोड और खदरा इन 2 क्षेत्रों का चुनाव किया। इन क्षेत्रों में काफी दुविधाजनक स्थिती है। समुदाय में निम्न शिक्षा स्तर, ज़्यादातर पारंपरिक एवं धार्मिक शिक्षा की मौजूदगी, स्वच्छता के मामले में चिंताजनक हालात, गंभीर परिवारिक समस्याओं (असमानता, तीन तलाक, हिंसा, रोक-टोक, आदि) की उपस्थिती लगभग हर घर में नज़र आती है।

नज़रिया लीडरशिप केंद्र(सामुदायिक केंद्र) में चल रहे "नए कौशल नई राहें" कार्यक्रम नारीवादी नज़रिया निर्माण के साथ युवा महिलाओं को आजीविका एवं रोज़गार के लिए तैयार करता है।

इस कार्यक्रम में 18 वर्ष-30 वर्ष आयु की लड़कियां जुड़ती हैं। "किशोरी मोहल्ला मंच" से सामाजिक मुद्दों की समझ बनाकर लड़कियां इस कार्यक्रम में प्रवेश करती है। यह कार्यक्रम मंच की किशोरियों के साथ-साथ मोहल्लों की अन्य किशोरियों एवं युवा महिलाओं को भी खुले दिल से आमंत्रित करता है ,जहाँ वे भविष्य में आवश्यक अग्रिम कौशलों को सीखती हैं।

इस वर्ष कुल 40 युवा महिलाएं कार्यक्रम में शामिल रहीं।

कार्यक्रम की खास उपलब्धियां

- कार्यक्रम के अंतर्गत प्रतिभागियों को सॉफ्ट कोर स्किल्स सिखाये जाते है जैसे- संवाद-संचार, आत्मविश्वास, टीम वर्क, सहभागिता, समस्या समाधान, नेटवर्किंग आदि

- हार्ड कोर्स स्किलस जैसे- माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस, हिंदी टाइपिंग, रिज्यूम बनाना, डाटा-एंट्री, ई-मेल, जी-मेल संबंधित विस्तृत जानकारी एवं इस्तेमाल करना सिखाया जाता है।

- अग्रिम कौशल जैसे- फोटोग्राफी, सोशल मीडिया हैंडलिंग एवं मार्केटिंग, इंग्लिश लैंग्वेज स्पीकिंग कोर्स आदि कौशल भी यह कार्यक्रम विकसित करता हैं |

- किशोरियों में सामाजिक सेवा और विकास में रूचि निर्माण के साथ ही उनको इंटर्नशिप द्वारा जॉब मार्केट एक्सपोज़र तथा व्यावहारिक प्रशिक्षण भी दिया जाता है।जिसके चलते टेलिकम्युनिकेशन इंडस्ट्री, प्रशासनिक सेवा, मार्केटिंग पुरुष प्रधानता मौजूद रोज़गार क्षेत्रों में जब युवा महिलाएं प्रवेश करती है, तो वे आत्मविश्वास के साथ निडर होकर संस्थानों एवं कार्यस्थलों पर अपनी जगह बनाने एवं पहचान बनाने में सक्षम होती है।

युवा महिलाओं के लिए यह कार्यक्रम नहीं बल्कि आज़ादी है !

युवा महिलाएं अपने घर से ज़्यादा केंद्र में खुद को सुरक्षित महसूस करती है। उनके लिए केंद्र ऐसा स्थल है जहाँ वे आज़ादी के साथ अपने इच्छाओं और भावनाओं को खुलकर रख पाती है।

कार्यक्रम के दौरान इन्हें अन्य संस्थानों से मिलने और उनसे सीखने के मौके प्राप्त होते हैं, जहाँ वे अपने प्रभावी बोल-चाल, रहन-सहन जैसे तरीकों में बदलाव महसूस कर पाती हैं तथा इन कौशल को नेटवर्किंग के लिए प्रयोग में लाती हैं।

कार्यक्रम की प्रमुख गतिविधियाँ

नज़रिया निर्माण कार्यशाला	39	प्रतिभागी
बेसिक कंप्यूटर कार्यशाला	38	प्रतिभागी
जॉब रेडी स्किल्स कार्यशाला	42	प्रतिभागी
डिजिटल मीडिया एंड कम्युनिकेशन कार्यशाला	34	प्रतिभागी
मेंटल हेल्थ मैनेजमेंट कार्यशाला	34	प्रतिभागी
इंग्लिश लैंग्वेज कोर्स	28	प्रतिभागी
एक्सपोज़र विज़िट	30	प्रतिभागी
फिल्ड वर्क लर्निंग	25	प्रतिभागी
सामुदायिक अभियान	100	प्रतिभागी

एक्सपोज़र विज़िट -

"एक्सपोज़र विज़िट" यह कार्यक्रम में शामिल सभी साथियों के लिए काफी मज़ेदार और सुनहरा अनुभव होता है। हमारा आशय किशोरियों को उनके भावी जीवन में विशेष पहचान प्राप्ति के लिए उन्हें आवश्यक क्षेत्रों से परिचित करवाना है। इसलिए हम उन्हें, वे जिन भी क्षेत्रों में रूचि रखती है उन सभी क्षेत्रों से रूबरू करवाने का प्रयास करते हैं। इस वर्ष हुए सारे खुबसूरत दौरों का नज़ारा का निम्न है।

कला प्रदर्शन-फोटो एक्ज़िबिशन विज़िट (लाल बारादरी)

लड़कियों ने फोटोग्राफी क्षेत्र की विशेषताओं को नजदीकी से जाना

रेडियो मिर्ची विज़िट

रेडियो के क्षेत्र में प्रभावी बातचीत कौशल के महत्त्व को समझा

लखनऊ यूनिवर्सिटी विज़िट

समाज सेवा क्षेत्र में रूचि रखने वाली लड़कियों को इस विज़िट द्वारा और भी अन्य सामाजिक क्षेत्रों से रूबरू कराया

जॉब स्किल्स कार्यशाला के तहत एक्सपोज़र विज़िट

औद्योगिक क्षेत्रों की विस्तृत जानकारी के लिए औषधि उत्पादक कंपनी से मुलाकात करायी

कॉमन विज़िट

प्रशासनिक सेवा और परीक्षाओं की विस्तृत जानकारी के लिए "सखी वन स्टॉप सेंटर" के अधिकारी द्वारा ट्रेनिग हुयी

वो दिन अब दूर नही...

“मेरा नाम मुस्कान (बदला हुआ नाम) है। मैं अभी पढ़ाई कर रही हूं , और मैं नज़रिया लीडरशिप सेंटर से जुड़ी हूं। मुझे सेंटर से जुड़े हुए एक साल हो गया है। सेंटर से जुडकर मेरे अंदर बहुत से बदलाव हुये हैं जिन्हें मैं महसूस कर रही हूँ।

सेंटर ने मुझे बहुत कुछ करने और समझने का हौसला दिया है। मैंने खुद पर हो रही हिंसा एवं अपमान के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाना सिखा हैं। मैं घर की चार दीवारी में रहने वाली लड़की थी, जिसने अपने ख्वाबों को अपने दिल में ही दबा कर रखा हुआ था। ये वो समय था जब मुझे ख्वाब देखने का, या उनको पूरा करने का कोई हक़ नही था। लेकिन सेंटर ने मुझे ख्वाब देखना और उनको पूरा करने का हौसला दिया और मेरा साथ दिया।

सेंटर ने मुझे मेरी बात रखना सिखाया है। जिंदगी की परेशानियों से लड़ना सिखाया और उनको सुलझाना सिखाया। आज मैं आज़ाद हूं। मैं ख्वाब देख भी रही हूं और उनको पूरा भी करूंगी।”

“ख्वाहिशें भले ही छोटी सी क्यों न हों ,
लेकिन उनको पूरा करने के लिए दिल जिद्दी सा होना चाहिए।”

वो दिन अब दूर नही...

“मैं फौजिया (बदला हुआ नाम) एक पर्दा नशीं लड़की थी,जो घर में बिल्कुल चुपचाप रहती थी।

मुझे पहले लगता था की घर में रहने वाली लड़कियां अच्छी होती हैं और बाहर निकलने वाली लड़कियां खराब होती है। वह घूमती है, फिरती है, घरवालों का नाम बदनाम करती हैं। मुझे छोटे कपड़े पहनने वाली लड़कियों से भी बहुत नफरत होती थी। मैं पहले कही आती जाती नहीं थी। और मुझे मेकअप, नाच-गाना भी बिल्कुल पसंद नहीं था।

जब से मैं मंच और सेंटर से जुड़ी हूं तो मेरे सोच और रवैय्ये में बहुत सारे बदलाव हुए हैं। पहले तो सेंटर में 2 महीने तक मेरी शक्ल भी कोई देख नही पाया था, क्योंकि मैं अपने-आप को पुरे मास्क और नक़ाब से ढके रहती थी, लेकिन अब मैं सेंटर पर बिना नक़ाब और मास्क के साथ बैठती हूं। अब कहीं भी बाहर जाने की बात आती है तो मैं सबसे पहले खुद का नाम देती हूं। मैं अब लीडरशिप को समझती हूं।

मैं अपनी खुद की बेकरी खोलना चाहती हूं और ये सपना पूरा करने के लिए आगे बढ़ने की कोशिशों में जुटी हूं। मैं सभी लोगों से मिल-जुलकर रहती हूं। मैं मेरे नज़रिए में बदलाव महसूस कर पा रही हूं।”

महिला नेतृत्व विकास कार्यक्रम 2023-2024

महिलाओं का सामाजिक विकास में स्थान नगण्य नहीं बल्कि महत्वपूर्ण है!

हम ने किशोरियों एवं महिलाओं की ज़िम्मेदारियां, समय और ज़रूरतों को समझते हुए कार्यक्रमों की संरचनाएं की हैं। परिवारिक माहौल से निकलकर 'सशक्त' होने का सफ़र काफी संघर्ष से भरा होता है इसकी हमें एक नारीवादी संघटन होने के चलते अच्छी अनुभूति है।

जिसने कई सालों से स्वयं को कहीं खो दिया हो, जिनका जीवन रुढ़िवादी सोच और परंपरा से घिरा हो, कंधो पर मानो ज़िम्मेदारियों का पहाड़ हो ऐसे स्थिती में व्यक्ति का मौजूदा परिस्थिती से बाहर निकालना तथा वह जीवित होने के साथ, उसकी भी कोई पहचान है इस अहसास की पुनः जागृति करना आसान नहीं है।

हम हर साल इस कोशिश में भरपूर ऊर्जा और लगन के साथ लगकर काम करते हैं। इस दौरान मिले अनुभवों को सीख स्वरुप स्वीकार करके कार्यक्रमों का नियोजन करते हैं। इसी के साथ समुदाय में हम समानता, समता, भाईचारा आदि मूल्यों को आत्मसात करने हेतु बढ़ावा देते हैं।

महिलाओं के कार्यक्रमों का निम्न स्वरुप है।

महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम

हम समुदाय की वास्तविक स्थिती से परिचित है, जहाँ हमें महिला समाज के हर तबके में वंचित और पिछड़ी नज़र आती है। महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम से अभिलाषा है की, महिलाएं उनके संवैधानिक, मानव-अधिकारों और हकों के लिए जागरूक हो जिससे वह सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक निर्णय लेने में स्वयं सक्षम हो। साथ ही वे लिंग आधारित हिंसा और भेदभाव मुक्त परिवेश का निर्माण कर सकें।

महिला कार्यक्रम

1. **महिला संगठन (महिला फोरम)**
2. **सुचना डेस्क (इनेबलिंग एक्सेस टू एंटाइटलमेंट)**
3. **संघर्षशील महिलाओं के साथ मिलकर जेंडर आधारित हिंसा का मुकाबला करना एवं क़ानूनी सहायता प्रदान करना**
4. **रोज़गार सहायता**
5. **तकनीकी साक्षरता कार्यक्रम (डिजिटल लिटरेसी)**

1. महिला संगठन (महिला फोरम) - इसका मुख्य लक्ष्य सामुदायिक स्तर पर महिलाओं का संगठन बनाना है, ताकि उन्हें सामाजिक मुद्दों की पहचान हो और उनकी सार्वजनिक क्षेत्रों में भागीदारी बढ़ सके ।

किशोरी मंच के तरह यह भी ऐसा केंद्र है जो समुदाय में महिलाओं के लिए संचालित है। यह "महिला संगठन" नाम से प्रचलित है| सामुदायिक स्तर पर सशक्तिकरण हेतु महिलाओं को संगठित करके गहन क्षमतावर्धन प्रक्रिया में बढ़ावा देने के लिए इस मंच का नियोजन किया है।

महिला फोरम की सदस्यों का - सत्ता, पितृसत्ता, लिंग आधारित भेदभाव, पहचान, हिंसा, महिला संरक्षण कानून, समता, समानता, हक़ और अधिकारों से संबंधित विषय पर ट्रेनिंग और मज़ेदार गतिविधियों द्वारा क्षमतावर्धन किया जाता है। इस प्रकार महिला फोरम से निकलकर आयी जागरूक महिलायें अपने सामुदाय के अन्य महिलाओं में उन्होंने सीखे हुए कौशल एवं जानकारी का प्रसार एवं प्रचार करती हैं।

जागरूक महिलायें अपने पारिवारिक एवं सामुदायिक स्तर पर आजीविका के अवसरों को सुनिश्चित करके हिंसा मुक्त, और सम्मानपूर्ण जिंदगी की अपेक्षा कर पाती हैं।

वर्त्तमान में लखनऊ के राधाग्राम, खदरा, जनता नगरी, गढ़ी कनौरा, बरौरा, कैंपल रोड, गुलज़ार नगर और डाली गंज जैसे 8 क्षेत्रों में मंच चल रहे हैं।

कुल 22 मंच हैं, जो 22 लीडर (नेत्रियों) द्वारा संचालित है, जिसमे लगभग 250 से अधिक महिला सदस्य हमसे जुड़े हैं।

नई पहचान

"मेरा नाम ज़किया (बदला हुआ नाम) हैं और मैं खदरा में रहती हूँ। मेरे दो बच्चे (एक बेटा और एक बेटी) हैं। मैं काफ़ी मुश्किलों से दोनों बच्चों को पढ़ाती हूँ। मेरे पति कढ़ाई का काम करते हैं और मैं घर संभालती हूँ। पति के कढ़ाई काम से, घर की बुनियादी ज़रूरते पूरी हो सके इतनी भी आमदनी नहीं मिलती जिससे, ना तो मैं बच्चों की कोई इच्छाओं को पूरा कर पाती और ना ही अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दे पाती। इन गंभीर हालातों में 'संस्था' से जुड़ाव के बाद मुझे थोड़ी राहत और हिम्मत मिली। मैंने मेरी बेटी का भी संस्था के अलग-अलग कार्यक्रमों से जुड़ाव किया। अब वह संस्था द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों का हिस्सा हैं। मैं खुद के साथ मेरी बेटी में भी कई सारे सुधार और बदलाव देख रही हूँ। मुझे बेटी की शिक्षा में समस्या थी, मैं उसकी पढ़ाई नही करवा पा रही थी। तब संस्था से मुझे मदद भरा हाथ मिला। अब मेरी चिंता थोड़ी कम हो गयी क्योंकि मेरी बेटी कुछ सीख पा रही है। मेरी अपनी कोई पहचान नही थी क्योंकि मैं घर से बाहर निकली ही नही थी। मेरे पति को मेरा घर से बाहर निकलना पसंद नही था, पर मंच के माध्यम से मुझमे और मेरे द्वारा उनमे (पति) काफ़ी बदलाव हुआ है। रोज़गार के लिए मैं भी सिलाई का काम करती हूँ। मैंने 'नज़रिया कार्यशाला' से लीडरशिप की ट्रेनिंग ली है, जिससे मेरा नज़रिया बदला है। मैं अब ट्रेनिंग के लिए अकेले ही संस्था में आती-जाती हूँ। मैं अपने मंच की लीडर हूँ। अब मेरी भी एक लीडर के रूप में अपनी पहचान है और मैं इस आज़ादी से खुश हूँ।"

इस वर्ष हमने लगभग 50 महिलाओं के दस्तावेज़ संबंधित ज़रूरतों को पूरा किया एवं लगभग 300 महिलाओं को जागरूक किया।

2. सूचना डेस्क (इनेबलिंग एक्सेस टू एंटाइटलमेंट)

- "सूचना डेस्क" एक अग्रिम सक्षमता के लिए किया हुआ प्रयास है, जो समुदाय की महिलाओं को अपने मौलिक हक़ के प्रति सचेत करता है।
- इसका आशय महिलाओं को सरकारी योजनाओं तक पहुँचने में सक्षम बनाना है जिससे वह हर ज़रूरी आवेदन प्रक्रिया की निगरानी एवं जवाबदेही को सुनिश्चित कर सकें।
- डेस्क आवश्यक दस्तावेज़ सम्बंधित जानकारी के प्रसार एवं प्रचार का समर्थन करता है।

- यह डेस्क, महिला मंच से जुड़ी 'महिला लीडर्स' द्वारा समुदाय में मौजूद अन्य महिलाओं को सरकारी योजनाओं एवं अधिकारों की जानकारी देने के साथ उन्हें योजनाओं तक पहुँच बनाने हेतु सक्षम करता है। जैसे - खाद सुरक्षा, स्वास्थ्य अधिकार एवं लाभ, वित्तीय साक्षरता और शैक्षिक छात्रवृत्ति जैसी आदि सुविधायें।
- हम दस्तावेज़ सम्बंधित ज़रूरतों को सुनिश्चित करने के लिए समुदाय में संशोधन/सर्वे करते है, फिर उनसे निकलते निष्कर्षों के आधार पर आवश्यक योजना एवं जानकारी का प्रसार करते हैं।

3. संघर्षशील महिलाओं के साथ मिलकर जेंडर आधारित हिंसा का मुकाबला करना एवं क़ानूनी सहायता प्रदान करना

महिलाओं को हिंसा एवं लिंग आधारित हिंसा की पहचान करवाने के साथ उनकी हिंसा सम्बंधित कानूनी ज्ञान में वृद्धि करना हमारा उद्देश्य है। इस उपरांत महिलाओं को अपने मत अनुसार निर्णय लेने में सहायता प्रदान करना एवं उन्हें नए विकल्प देते हुए पुनः स्थापित करने का हम कार्य करते हैं।

रोकथाम और जागरूकता

हमारे नेतृत्व कार्यक्रम का महिलाओं और लड़कियों के साथ लिंग आधारित हिंसा पर रोकथाम और जागरूकता का कार्य यह प्रमुख हिस्सा है। इसके तहत हम भेदभाव, हिंसा की पहचान कर उसे रोकना और संबंधित कानूनों का प्रचार एवं प्रसार करतें हैं।

रिस्पोंस और जवाबदेही -

लिंग आधारित हिंसा के मामले में हमारा नज़रिया बहु आयामी है। जब हिंसा अनुभवी महिलाएं लड़कियां हमारे पास आती है, तब हम उनकीं समस्याओं पर अच्छी तरह सोच-समझकर उनके लिए उचित सलाह देने में विश्वास रखते हैं। और उनकें मत अनुसार कार्यवाहीं के उचित तरीकों को निर्धारित करके सक्रिय रूप से उनकी सहायता करते हैं, फिर चाहे वह क़ानूनी कार्यवाही हो, या मध्यस्थता के मार्ग से समाधान हो।

हम इस वर्ष में लगभग 25 महिलाओं को क़ानूनी सहायता प्रदान करने में सक्षम रहें।

क़ानूनी साक्षरता -

हिंसा अनुभवी महिलाओं को निशुल्क क़ानूनी साक्षरता एवं जागरूकता प्रदानं करते हैं। जिससे वह खुद पर हुईं और होने वाली हिंसा को एवं अपने आस-पास में होने वाली हिंसा को पहचान सकें और उससे संबंधित कार्यवाही करने में सशक्त हो सके।

इसमे विशेष जानकारी (हिंसा और हिंसा के प्रकार, क़ानूनी धाराएँ, आदि) को बेहद गहरे और सरल तरीके से महिलाओं तक सलाहकार एवं विशेषज्ञों द्वारा पहुँचाया जाता है और समझ बढ़ाने का कार्य करते हैं।

हम इस वर्ष में लगभग 100 से अधिक महिलाओं को कानूनी और सामाजिक मुद्दों पर जागरूक करने में सफल रहें।

4. रोज़गार सहायता

संघर्षशील और ज़रूरतमंद महिलाओं को रोज़गार सहायता के ज़रिये हम उन्हें आर्थिक दृष्टी से सक्षम एवं आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास करते हैं।

इस वर्ष में हमनें कुल 16 महिलाओं को रोज़गार सहायता के माध्यम से उनकी आर्थिक स्थिति में स्थिरता लाने की कोशिश की है।

उम्मीद की किरन...

मेरा नाम नसीबुन (बदला हुआ नाम) है। मैं गढ़ीकनौरा की रहने वाली हूं। मैं गरीबी रेखा से नीचे का जीवन यापन करती हूं। मेरी एक बेटी है, मेरे पति मुझे छोड़कर चले गये है। मेरी बेटी जब पैदा हुई थी तब वो विकलांग थी। मैं चाहती थी की मेरे बेटी का इलाज़ हो और वो ठीक हो जाये, पर मेरे पति कहते थे की वो लड़की की दवा नही करायेंगे अगर लड़का होता तो दवा करवाते, और उन्होंने मुझे घर से निकाल दिया और मुझें तलाक़ दे दिया। उसके बाद मैं अपने मायके में रहने लगी और दूसरों के घर जा कर खाना बनाने लगी जिससे की कुछ पैसा आ सके। मेरी बेटी जब 4 साल की हो गयी मुझे कुछ पैसा भी मिलने लगा तब मैंने उसका इलाज़ कराना शुरु किया। मैंने अपना सारा पैसा अपनी बेटी के इलाज में लगा दिया। कुछ साल बाद उसका पैर सही हो गया। अब उसे पढ़ना था जिसके लिए मेरे पास पैसे नही थे। इस दौरान मुझें एक संस्था (सद्भावना) का पता चला जहाँ मैंने अपनी समस्याओं को बताया और मुझे वहा से मेरी बेटी की पढ़ाई के लिए मदद मिली। अब मेरी बेटी पढ़ाई कर पा रही है। संस्था से मुझे रोज़गार के लिए सिलाई मशीन मिली अब उसी से मेरा घर का गुज़ारा चलता है।”

“मेरा नाम निशा (बदला हुआ नाम) है। मैं एक मध्यम परिवार की महिला हूं। मैं अपने भाई-भावज और माँ के साथ रहती हूं। मेरे माँ-बाप ने मेरी शादी कर दी, मेरा पति मुझे बहुत मारता-पीटता था। मैंने कुछ दिन पति के साथ रहने की कोशिश की लेकिन उसकी हिंसा बढ़ती ही रही फिर मैं तंग आ कर अपने घर (मायके) आ गयी। उसने मुझे तलाक़ दे दिया। मैं बहुत परेशान रहती थी। किसी से भी बात नही करती थी। बस घर में ही रहती थी। मेरी आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नही थी की मैं मुक़दमा कर पाऊं, भाई-भाभी भी साथ नही देते थे की, मैं अपने लिए कुछ कर पाऊं। समाज का भी डर रहता था की लोग क्या कहेंगे? बस हर वक्त यही सोचती और रोती रहती थी। जीने का मन नही करता था। फिर मैं मंच में जुड़ गयी। धीरे-धीरे पता चला की यहाँ कोर्ट पैरवी भी देखी जाती है। संस्था क़ानूनी मदद करती है, तब मुझे मेरे लिए एक रास्ता दिखा और मैंने अपनी सहमती दी और अपने हक़ के लिए मुक़दमा लड़ने लगी। मैं पेशी में जाने लगी। अब मैं कोर्ट जाती हूँ और लोगों को देखती हूँ तो मुझें जीने और संघर्ष करने का सहारा मिलता है। अब मुझे अच्छा लगता मैं अपने लिए जीना चाहती हूँ। मैं सद्भावना से जुड़ कर अब बहुत खुश हूँ।”

4. तकनीकी साक्षरता कार्यक्रम (डिजिटल लिटरेसी प्रोग्राम)

डिजिटल लिटरेसी कार्यक्रम का उद्देश्य महिलाओं का डिजिटल दुनिया से परिचय कराना है, जिससे वह अपने रोज़मर्रा की जिंदगी में आने वाली डिजिटल चुनौतियों का सामना कर सके और खुद से अपनी समस्या का समाधान निकालने में सक्षम हो सके। पीढ़ी(generation) और समय की मांग को समझते हुए महिलाएं तकनीकी दुनिया से बहुत वंचित और अनजान नज़र आती है, इसलिए महिलाओं का तकनीकी दुनिया से परिचय करवाना, उन्हें तकनीकी कौशल प्रदान करना एवं उनका तकनीकी दुनिया से मित्रतापूर्ण रिश्ता जोड़ना हमारा यह साधारण आशय है।

इस कार्यक्रम का संचालन 'नज़रिया लीडरशिप केंद्र' से किया जाता है। कार्यक्रम महिलाओं को 1 वर्ष तक डिजिटल एवं तकनीक की बुनियादी जानकारी से लेकर कुशल जानकारी तक शिक्षा प्रदान करने में समर्पित है।

कार्यक्रम के प्रमुख गतिविधियाँ

- कार्यक्रम निरक्षर एवं साक्षर महिलाओं को विजुअल मेमोरी के साथ, आइकॉन, क्रोम, गूगल, गूगल मैप्स, यूटुब का इस्तमाल करने का विस्तृत जानकारी सरल तरीकों से प्रदान करता है।
- कार्यक्रम द्वारा महिलाएं नेट और मोबाइल बैंकिंग (UPI, बारकोड, G-pay, Phone-Pe) आदि का इस्तेमाल, इ-कॉमर्स एप्लीकेशन जैसे - OLA, UBER, Amazon, Flipkart, Swiggy, आदि का उपयोग करना सीखती हैं ।
- कार्यक्रम द्वारा महिलाओं का स्वास्थ (शारीरिक एवं मानसिक), सत्ता, पितृसत्ता, लिंग आधारित भेदभाव, पहचान, हिंसा, समता, समानता, हक़ और अधिकारों से संबंधित विषय पर ट्रेनिंग और मज़ेदार गतिविधियों द्वारा क्षमतावर्धन किया जाता है।

इस वर्ष में कार्यक्रम में कुल 20 महिलाओं को ट्रेनिंग द्वारा तकनीकी क्षेत्र में साक्षर करने में हम सफल रहें।

परिणाम

- कार्यक्रम के दौरान कार्यशालाओं से सीखे हुए कौशलों और जानकारी को महिलाएं आत्मसात कर पायी हैं।
- कार्यक्रम द्वारा महिलाएं अपने रोज़मर्रा के जिंदगी में तकनीकी समस्याओं का सामना करने में और उन समस्याओं के समाधान में स्वयं सक्षम हुईं हैं।
- महिलाओं ने कार्यक्रम के दौरान बारीकी से सीखें पाठ्यक्रमों के हर विषय का पठन किया एवं उसे प्रत्यक्ष तौर पर प्रयोग में भी ला पायी। जैसे - नेट बैंकिंग कार्यशाला के उपरांत लगभग 8 महिलाओं ने खुद को किसी के भी मदद के बिना बैंक खाता खुलवाया हैं। अब वे महिलाएं G-pay, Phone-Pe जैसी सुविधाएँ इस्तेमाल कर पा रही हैं। कार्यक्रम की महिलाएं ऑनलाइन शॉपिंग-खाना ऑर्डर करना, ऑनलाइन सवारी (cab) बुकिंग कर पायी हैं।
- कार्यक्रम द्वारा महिलाओं के स्वास्थ (शारीरिक एवं मानसिक) में सुधार हुआ है। क्योंकि मेंटल हेल्थ वर्कशॉप के ज़रिये महिलाओं की मानसिक स्वास्थ्य के बारे में गहराई से समझ बना पायी।

कुछ कदम सफलता की ओर...

“मेरा नाम किरण (बदला हुआ नाम) है। मैंने इंटर किया हुआ है। मेरा एक साल का बेटा है। मैं अपने पति के साथ लखनऊ में किराए पर रहती हूं। मैं एक आशा वर्कर हूं। मेरा बेटा उम्र में काफी छोटा होने की वजह से मुझे काम करने में बहुत ही ज़्यादा दिक्कतें होती हैं।

मुझे डिजिटल चीज़ें सीखने का बहुत शौक है इसलिए मैं अपने काम से सेंटर जाती हूं और उत्सुकता के साथ सीखती हूँ।

मेरे ससुराल वाले दिल्ली में रहते हैं। मेरे पति का एक पैर सही ना होने के कारण वो कुछ काम नहीं कर पाते हैं। जिसकी वजह से मुझे ही सारा घर का खर्चा, जैसे खाना-पीना, दवाई, इलाज़ ऐसी हर चीज़ देखनी पड़ती है पर आशा बहू होने के नाते इतनी ज़्यादा इनकम नहीं होती है कि मैं कुछ कर सकूँ। इसलिए मैं कुछ ऐसा सीखना चाहती हूँ जिससे मैं अच्छे पैसे कमा पाऊं। इसलिए मैं डिजिटल लिटरेसी प्रोगाम से जुड़ी और मैंने बहुत सारी डिजिटल चीज़ें सीखी। अब मैं कोशिश कर रही हूँ, कि मुझें आशा बहू से ऊपर की कोई पोस्ट मिले जिससे मुझें अच्छी तनख्वाह के साथ नौकरी मिल सकें, और मैं अपने घर को और अपने बच्चें की अच्छी परवरिश कर पाऊं। इसलिए मैं खुद को घर पर बांधकर नहीं रखती और बाहर निकलकर काम करती हूं।”

“मेरा नाम ‘गुलिस्ता’ है। मैं एक एकल महिला हूं। मेरी शादी को 4 से 5 साल हुए हैं। मेरे पति शादी के बाद मेरे साथ बस 2 महीने ही रहे। जब मैं प्रेग्नेंट थी तो मेरे ससुराल वाले मुझें मेरे मायके छोड़कर चले गए और उन्होंने मुझें कुछ दिनों में आकर ले जाएंगे ऐसी झूठी तस्सली दी, लेकिन आज तक मुझें लेने नहीं आए और ना ही पलटकर कभी मेरा हाल-चाल जाना। मेरी एक चार साल की लड़की है जिसके लिए मैं परेशान रहती थी। लेकिन जब मैं सेंटर पर कोर्स से जुड़ी तब, मैंने अपनी सारी परेशानियों को बताया। मैं अपने आप को रोने से रोक न सकीं। फिर मैंने सेंटर में चल रहे “डिजिटल साक्षरता” के कोर्स में जुड़ना तय किया। कुछ समय बाद कोर्स ज्वाइन किया। मुझें सेंटर पर बहुत सारी चीज़ें सीखने मिली, जैसे- नज़रिया निर्माण कार्यशाला, डिजिटल लिटरेसी से जुड़ीं सभी जानकारी। इन कार्यशालाओं में मैंने बहुत सारी चीजें सीखी जी-पे, जी-मेल, डॉक्यूमेंट को पी.डी.एफ में कन्वर्ट करना, ऑनलाइन शॉपिंग करना, ऑनलाइन पेमेंट करना, ऑनलाइन खाना ऑर्डर करना, ऑनलाइन इलेक्ट्रिसिटी बिल का पे करना। मेरी कोई भी मुद्दें को समझने और देखने की अलग सोच बनी हैं जिससे मुझें मेरे नज़रिए में काफी बदलाव हुए हैं, यह दिखाई देता है। मैं जब मेंटल हेल्थ की वर्कशॉप में जुड़ी तब कार्यशाल के दौरान ही अपनी बेटी के भविष्य के प्रति चिंता के चलते रोने लगी। परन्तु आज मुझमें हौसला है और मैं अपनी बेटी के लिए खूब मेहनत करूंगी और उसकी पढ़ाई पूरी करूंगी। मैं अपनी बेटी को भी कंप्यूटर सीखने, भविष्य में आवश्यक जानकारी लेने के लिए और नज़रिया निर्माण के लिए सेंटर से जुड़ाव करना चाहूंगी।”

डिजिटल मीडिया एंड कम्युनिकेशन कार्यक्रम

यह हमारी एक पहल है जिसकी शुरुआत अनोखी और मज़ेदार कहानियों से हुई हैं। सामुदायिक स्तर पर हुनर एवं क्षमतावर्धन करने हेतु, महिलाओं एवं किशोरियों को खुबसूरत पहचान देने के लिए, सच्ची हक़ीकत से रूबरू करने एवं संघर्षों की प्रशंसा करने में कार्यक्रम का समर्थन है। यह कार्यक्रम हमारी पहुँच की वृद्धि का सबसे अहम हिस्सा है।

"लखनऊ लीडर्स" यह डिजिटल मीडिया एंड कम्युनिकेशन कार्यक्रम की पहल है जिसकी शुरुवात 'सद्भावना ट्रस्ट' द्वारा कोरोना के समय में हुईं, जब पूरा देश गंभीर,चिंताजनक परिस्थितियों से जूझ रहा था। लखनऊ लीडर्स यह हुनर से परिपूर्ण एक विलक्षण जाल है जिसका संचालन सामुदायिक संघर्षों से उभरकर आयी युवा लीडर्स करती है। हमारा **'डिजिटल मीडिया एंड कम्युनिकेशन कार्यक्रम'** इन्हीं लड़कियों के नेतृत्व में चल रहा है।

इसका उद्देश्य वंचित समुदाय में रहने वाली महिलाओं के संघर्ष एवं सफलता की कहानियों को डिजिटल प्लेटफार्म के माध्यम से प्रचार-प्रसार करना है और उनके हुनर को समेटना एवं संरक्षित करके डिजिटल स्पेस में उन्हें पहचान एवं सम्मान दिलाना है।

लखनऊ लीडर्स, यूट्यूब के माध्यम से अन्य सोशल मीडिया प्लेटफार्म को खुद से जोड़ता है। यह संघर्षशील महिलाओं की सफलता तथा उनके संघर्षो एवं हुनर की कहानियों को अभिलेखित करके प्रदर्शित करने का कार्य करता है। जिससे सामुदायिक स्तर पर अन्य महिलाएं प्रेरित हो सकें साथ ही वे पहचान एवं सम्मान प्राप्त कर सके।
लखनऊ लीडर्स का कार्य निम्न 2 चरणों में चलता हैं :

मोहल्ला पकवान (कम्युनिटी रेसिपी हब)
मोहल्ला रेडियो (कम्युनिटी बेस्ड पॉडकास्ट)

1. मोहल्ला पकवान (कम्युनिटी रेसिपी हब)

यह एक ऐसी अनोखी पहल है जिसमें बस्तियों में रहने वाली महिलाओं द्वारा कम से कम सामग्री में बने नए स्वादिष्ट व्यंजनों का खासकर प्रदर्शन होता है।

इस पहल के पीछे एक हुनर से भरी कहानी छिपी है। 2019 यह वह समय है जो **"लॉक डाउन/शहरबंदी"** या **"कोरोना महामारी"** के नाम से मशहूर है और जिसकी यादों से आज भी हमारी धड़कनों का तेज़ होना लाज़मी है. इस परिस्तिथि के दौरान कुछ त्यौहारों के भी दौर आयें ऐसे में निम्न-मध्यम वर्गीय परिवारों से सामान्य महिलाओं ने अपने घर में मौजूद कम से कम सामग्री के प्रयोग से अद्भुत व्यंजनों की खोज एवं पहचान करवाईं थी।

और **'लखनऊ लीडर्स'** इसी महिलाओं के हुन्नर की प्रसंशा सोशल मीडिया के ज़रिये उन्हें प्रदर्शित करके करता है, तथा उन महिलाओं और उनके काम को पहचान देने में मदद करता है।

अब तक 10 से अधिक मोहल्ला पकवान की विडियो शूट हो कर यू-टुब चैनल पर अपलोड हो चुकी हैं।

2. मोहल्ला रेडियो (कम्युनिटी बेस्ड पॉडकास्ट)

"मोहल्ला रेडियो" काफी आकर्षक पहल है जो विभिन्न समुदाय, मोहल्लों और गलियों की कहानियों की बातें करता है. यह समुदाय के हर खट्टे-मीठे अनुभवों और यादों को समेटने का कार्य करता है। इसमें लड़कियां एवं महिलाएं अपने समुदाय में देखें-सुनें मुद्दों को एक कहानी के रूप में अपनी आवाज़ में लेकर आती है.

"मोहल्ला रेडियो" की शुरुआत 'सद्भावना ट्रस्ट' द्वारा आयोजित 'बुलंद आवाज़े' इस राज्यस्तरीय समारोह से हुई। इस समारोह में शामिल प्रतिभागियों के ज़रिये इसकी एक खास पहचान बनी। क्योंकि इस समारोह में शामिल सभी संस्थाओं से आयी महिलाएं एवं लड़कियों ने अपने खुद की जिन्दगी के निजी अनुभवों को बहुत बेहतरीन तरीकों से साझा किया जिसको सुनकर उन्हें बेहद ख़ुशी हुयी।

इस लिए हमने (लखनऊ लीडर्स टीम) इन सारे अनुभवों को समेटते हुए एक पॉटकास्ट का रूप देकर उसे मोहल्ला रेडियो नाम दिया और इस तरह इसे पहली सिरीज़ के तौर पर अपलोड किया और इस प्रकार आज यह हमारे सभी अंगो में से एक महत्वपूर्ण अंग है।

हम इस वर्ष में 2 सीरिज़ के 4 एपिसोड अपलोड करने में सफ़ल रहें।

रिचर्स बेस्ड डॉक्युमेंट्री

राजनितिक क्षेत्र में महिलाऐं

इस वर्ष में हमने **"राजनितिक क्षेत्र में महिलाएं"** इस थीम के तहत महिलाओं की राजनीतिक क्षेत्र में कैसी और कितनी भागीदारी है। यह एक रिसर्च के माध्यम से समझने की कोशिश की, जहाँ हमने लखनऊ और फैज़ाबाद इन क्षेत्रों में **150** महिला लीडर तक पहुँच बनाई फिर उनमे से **10 महिलाओं** का चुनाव इंटरव्यू के लिए किया। इस तरह उनके अनुभवों पर 2 डॉक्युमेंट्री फिल्मे बनाई गई।

अक्सर हमने देखा है राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश करने की किसी की मंशा नहीं होती, और इस क्षेत्र को अजीब नज़र से देखा जाता है। खासकर महिला और लड़कियों को तो इस क्षेत्र से काफी दूर रखा जाता है या यूँ कहूं उन्हें वंचित रखते है। इसलिए इन प्रेरणादायक महिलाओं से उनकीं हक़ीकत को जानकर सभी ने इस क्षेत्र में प्रवेश करने का महत्व जाना।

वेबिनार: हमने एक वेबिनार के ज़रिये फिल्म का ट्रेलर लॉन्च किया जिसमे दो प्रमुख वक्ता महिला चीफ गेस्ट के तौर पर निमंत्रित थे, प्रोफेसर (वत्सला शुक्ला और मालती सगाने)। उन्होंने महिलाओं की राजनीतिक स्थिति और संघर्षों के बारे में बात की। इस वेबिनार में करीब **500** से ज़्यादा लोग शामिल रहें।

फिल्म स्क्रीनिंग: यह कार्यक्रम लखनऊ विश्वविद्यालय में संपन्न हुआ जिसमे प्रमुख अतिथि के रूप में आरती सक्सेना (कस्टम कमिश्नर, उत्तर प्रदेश) एवं 5 क्षेत्रीय महिला सभासदों ने उपस्थिती दर्शायी थी। इसमें सभी अतिथियों ने अपनी जिंदगी में किन हालातों का सामना करकें, कठोर संघर्षों के उपरांत कामयाबी तथा पहचान को हासिल किया इन प्रेरणादायक अनुभवों को कहानी के ज़रिये समुदाय से आई लड़कियों एवं महिलाओं के सामने प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में लगभग **120** की संख्या में समुदायों से महिलाओं एवं लड़कियों की भागीदारी रही।

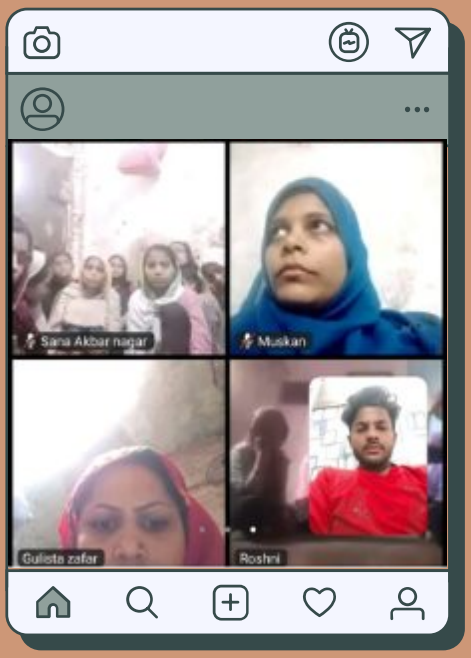

डिजिटल मीडिया एंड कम्युनिकेशन कार्यक्रम के माध्यम से इस वर्ष हमारी पहुँच का स्वरुप निम्न है |

971 posts

1,268 Followers

1133 Followers

72 Followers

110 Followers

1.58KSubscribers

सद्भावना ट्रस्ट द्वारा आयोजित रोमांचक समारोह एवं अभियानों की सुनहरी छवि और नेटवर्किंग

समारोह एवं अभियान यह हमारा एक महत्वपूर्ण पहलू है। महिलाओं एवं किशोरियों के आत्मविश्वास और क्षमताओं में वृद्धि करने का एक आकर्षक एवं ख़ूबसूरत माध्यम है। हमारे अभियान और समारोह महिलाओं के हक़ के जागृति हेतु तथा उनके सुरक्षा एवं विकास हेतु समर्पित है।

एक ओर हम समारोह के माध्यम से खूबसूरती के साथ समुदाय से निकली महिलाओं एवं लड़कियों के हुनरों, कौशलों को और उनमें कार्यक्रमों के द्वारा हुए परिवर्तन की झलक को प्रदर्शित करते हैं और उनकी प्रशंसा करते है ताकि अन्य प्रतिभागी भी उनसे प्रेरित होकर आत्मनिर्भरता और पहचान की खोज में स्वयं को संघर्षों के लिए तैयार कर सके।

वहीं दूसरी ओर हम आंदोलनों का नियोजन करके सब एकजुट होकर अपने हक़ और अधिकारों की मांग को आकर्षक तरीके से रखना सीखते हैं।

अभियान और समारोह ऑनलाइन एवं ऑफलाइन दोनों रूप में एक मज़बूत मंच स्वरुप काम करते हैं। हम आकर्षक समारोह एवं अभियानों के माध्यम से, सरकारी-गैर सरकारी संस्थानों, समुदायों से पहुँच बनाने में सक्षम हैं।

बुलंद आवाज़ें

हमारा 2023 वर्ष के माह जून का सबसे विशाल समारोह **"बुलंद आवाज़ें"** रहा, चूँकि यह एक राज्यस्तरीय समारोह था। यह समारोह एक मेले समान था, जो की 'सहभागी शिक्षण केंद्र' स्थल पर आयोजित किया गया। समारोह में विभिन्न राज्यों से **20 संस्थायें** शामिल रही। इसके अलावा काफी अनुभवी और तजुर्बो से परिपूर्ण अतिथियों तथा संसाधन विशेषज्ञों (रिसोर्स पर्सन) की उपस्थिति रही।

"बुलंद आवाज़ें" केवल सुनने से एक ऊँची आवाज़ होना, यह सोच आती है, परंतु एक ऊँची आवाज़ के साथ बुलंदी किस प्रकार जुड़ी है वह समारोह में उपस्थित रहकर सभी ने अनुभव किया। 15 से 17 जून ऐसे कुल 3 दिन तक चले लम्बे मेले ने सभी को काफी रोमांचित किया। यह मेला सामान्य रूप से, बचपन से, हम जो सुनते और देखते आये हैं, उससे केवल भिन्न न होकर बहुत 'अनोखा'था।
"मेला" शब्द उच्चारण की वजह - एक बड़ी संख्या में लोगों का मेल होना यह था, इसके अलावा मनोरंजन यह दूसरी वजह रही।

‘सहभागी शिक्षण केंद्र’ एक ऐसा कार्यस्थल बना जहाँ, हर चेहरों पर मनोरंजन दिखा, मुस्कुराहटे दिखी और नज़रों में उमंगे दिखी। साथ ही धीरे-धीरे बढ़ता हौसला और कुछ अलग कर दिखाने की चाह को महसूस किया गया। यह हौसला एवं चाह को रोमांचकता से भरे विभिन्न खेलों (खेल-खेल में नज़रिया बदलो) द्वारा तथा विशिष्ट क्षेत्रो में अनुभवी कार्यकर्त्ताओ को, उनके जीवन में कार्यरत रहते समय, जो विशेष सीख मिली थी उसे सांझा करने के माध्यम से बढ़ाया गया था। हम समारोह को मनोरंजन द्वारा सीखने-सीखाने का केंद्र बनाने में तथा नारीवादी मित्रता बढ़ाने में सफ़ल रहें।

समारोह में युवा महिलाओं की जिंदगी से जुड़े काफी महत्वपूर्ण मुद्दों का समावेश था,उदाहरण
मोहब्बत, पसंद और जिंदगी इन मुद्दों के माध्यम से युवा महिलाओं की इच्छाओं एवं अपेक्षाओं को जानना चाहा और **कार्यस्थल में महिलाएं (आज़ाद, उड़ान और पहचान)** इन मुद्दों के ज़रिये हमने पहचान प्राप्ति के सफ़र में युवा महिलाओं को किन संघर्षो एवं बाधाओं से सामना करना पड़ता है यह समझा गया।

इन मुद्दों के ज़रिये प्रतिभागियों के वर्त्तमान और भविष्य को सुरक्षित और सुंदर बनाने की एक छोटी-सी, प्यारी-सी कोशिश हमने की। कही ‘पैनल डिस्कशन’ द्वारा, कही ‘ट्रेनिंग-सेशन’ द्वारा, तो कही मज़ेदार खेलों के माध्यम से महत्वपूर्ण जानकारी को प्रतिभागियों तक पहुचाया गया। समारोह के माध्यम से समाजिक तथा वैयक्तिक सोच को लेकर प्रतिभागियों का अपना विशेष नज़रिया निर्माण करने का हमारा प्रयास रहा।

समारोह की अपनी कुछ विशेष खूबियाँ रहीं जिसने सभी को बेहद आकर्षित किया जैसे की - रेडियो बूथ, खेलों के स्टॉल, तरह-तरह की रोमांचक पेशकश (मेरी जिंदगी बैंड), क्विक शूट बूथ, फेमिनिस्ट वॉक आदि।

‘बुलंद आवाज़ें’ समारोह से राज्यीय एवं अन्तर्राज्यीय 20 संस्थाओं से मित्रता, एवं लगभग 150 संस्था साथियों के साथ सहभागिता करने में हम सफल रहें।

तोड़ी बंदिशें: मेरी भी जगह

16 दिवसीय अभियान: मानव अधिकार दिवस के मौके पर अभियान का समापन # कहो के साथ

हमने 25 नवम्बर से 10 दिसंबर के बीच16 दिवसीय अभियान का आयोजन किया जिसमे समापन हेतु **साइलेंट वॉक** के ज़रिये एक आकर्षक कदम लिया गया। हम सभी हमारी रोज़मर्रा की जिंदगी में, हमारे आस-पड़ोस, अगल-बगल के समुदाय में आम तौर पर हिंसा होते देखते हैं, उसे समझते हैं, उसे सहते भी हैं पर कुछ वजहों और दबावों के चलते हम हिंसा को नज़रंदाज़ करते हैं, तथा चुप्पी का साथ बखूबी निभाते हैं। ऐसे ही हम खुद के साथ अपनी आवाज़ को भी दबाए रखते हैं, और उस आवाज़ को गलत के खिलाफ उठाते नहीं हैं, तो इस अभियान अंतर्गत 'मानव अधिकार दिवस' के मौके पर सभी ने छोटी सी प्रतिज्ञा ली, कि अब इन हिंसाओं को सहना नही बल्कि हिंसा के खिलाफ कहना है।

अभियान के तहत हमारे समुदाय की लड़कियों ने लखनऊ के **'आयनोक्स चौराहे'** से लेकर **'शिरोज़ कैफे'** (एसिड अटैक जैसे गंभीर हिंसा सही हुई महिलाओं द्वारा चलाया जा रहा कैफ़े) तक साइलेंट वॉक के ज़रिये शांतिपूर्ण मार्ग को अपनाते हुए हिंसा को रोकने हेतु पहल करी। वाकई, यह पहल बहुत ही आकर्षक थी। सभी के एक तरह के कपड़े इस वॉक में अपना अलग ही रंग बिखेर रहे थे और इससे माहौल की कुछ अलग ही रंगत बनी थी।

इस कार्यक्रम में अतिथि के रूप में विनोद यादव (1090 महिला एवं बाल सुरक्षा कार्यालय), शोभा (1090 कार्यालय), मोहम्मद अली साहिल (पुलिस निरीक्षक अधिकारी), जया (शीरोज़ कैफे), प्रशांत चौबे (थियटर आर्टिस्ट), अनुष्का चतुर्वेदी (SHEF org) शामिल रहें। सभी ने हिंसा एवं हिंसा के विभिन्न रूप को अपने अनुभवों के साझेदारी द्वारा जाना।

बॉडी शेमिंग जैसे मुद्दों पर अनुभवों के ज़रिये बातें हुईं। किसी भी व्यक्ति का और खासकर महिला का रंग में सावला होना, या उसका शरीर से भारी होना इनके सामाजिक मायने और इन से होती हिंसा, अपमान और घृणा को समझा गया। हिंसा केवल सार्वजनिक स्थल पर ही नहीं बल्कि अपने खुद के घर में भी होती है, ऐसे गंभीर अनुभव सामने आए। सामाजिक माहौल और ज़रूरत को ध्यान में रखते हुए सभी ने हिंसा संबंधित जागरूकता में पुरुषों एवं युवाओं के अधिक समावेश की आवश्यकता जताई। इसी के साथ ही सभी ने "एक्टिव डेमोक्रेटिक सिटीज़नशिप", "इंडियास डॉटर कैंपेन", "टाइम इस मैन टू चेंज" की विशेषता को जाना।

अतिथिओं द्वारा **'हिंसा'** और **'बाल विवाह'** जैसे गंभीर मुद्दों पर चर्चाएँ हुई। इस कार्यक्रम में सभी का परिचय **'1090'** (महिला सुरक्षा पॉवर लाइन) से करवाया गया। अतिथियों ने, महिलाओं/किशोरियों पर हिंसा, वीमेन रैकेटिंग, एसिड अटैक जैसी गंभीर धमकियों एवं घटनाओं के लिए सख्त करवाईं प्रक्रिया की एवं इन मुद्दों से जुड़ी क़ानूनी जानकारी को साझा किया।

मानव अधिकार दिवस के मौके पर लखनऊ में मशहूर 'अम्बेडकर पार्क' यहाँ **'मीट टू स्लीप कैंपेन'** के अंतर्गत **'मेरी भी जगह'** नामक एक छोटी सी मुहिम की शुरुआत के ज़रिये सार्वजनिक जगहों पर गाते-झूमते और सोते हुए खूब मज़े लूटे तथा वहाँ अपनी विशेष जगह बनायीं।

परिणाम

कार्यक्रम में शामिल सभी साथी समुदाय से थे, जिन्होंने कभी घर की चार दीवारों से बाहर की दुनियां उनके परिवार के सदस्यों की अनुपस्थिति में शायद ही देखी थी। इसलिए उनका निडरता से सड़क पर उतरना, अपनी मांग को रखना यह अनुभव काफी अनोखा था, यह उनकी चाल और हाव-भाव ज़ाहिर कर रही थी।
सामाजिक बदलावों में उपस्थिति अहम हैं और इन बदलावों में सक्रियता पूर्वक शामिल रहने की ज़रुरत को सभी ने समझा। हर बार किसी को सुनाई दे ऐसी बुलंद आवाज़ होनी ज़रुरी नहीं होती, बल्कि शांति से भी करारा जवाब दे सकते है और गंभीर सवाल हम पूछ सकते हैं यह सीख इस कार्यक्रम के ज़रिये सभी को प्राप्त हुई।

हमने **'16 दिवसीय अभियान'** के माध्यम से लखनऊ के विभिन्न मोहल्लों-बस्तियों में विभिन्न मनोरंजक गतिविधियों के ज़रिये, संस्था, कॉलेज-विश्वविद्यालयों में ट्रेनिंग/खुलीं चर्चाओं के ज़रिये और साइलेंट वॉक, मेरी भी जगह ऐसी मुहीम के ज़रिये **#कहो** इस नारे के साथ हिंसा के विरोध में प्रचार एवं प्रसार की पहल करी। कार्यक्रम के ज़रिये लगभग **1000 से अधिक** लोगों तक पहुंच बनाने में सफ़लता मिली।

लखनऊ फेस्टिवल - आशिक़ाना लखनऊ
इश्क़ - आज़ादी या पाबंदी

वर्ष 2024 के शुरुआत में महिंद्रा सनतकदा लखनऊ फेस्टिवल-आशिक़ाना लखनऊ थीम के तहत **"इश्क़ आज़ादी या पाबन्दी"** हमारी इस थीम के साथ 5 दिवसीय समारोह पारित हुआ। हमारा प्रयास इश्क़ समुदाय की नज़रों में कैसा है, और क्या है? यह जानना एवं समझना था। साथ ही इश्क़ समुदाय के विभिन्न तबकों (जेंडर, वर्ग, उम्र आदि) के लिए क्या और कैसा है? और इश्क़ के इज़हारों के बदलते मायनों को समझना था।

हमने इन 5 दिनों के समारोह में मज़ेदार खेलों ("इश्क़ आज़ादी या पाबन्दी?" और "ट्रुथ और डेअर") का समावेश रखा था। इन खेलों का मज़ा सभी प्रतिभागियों ने खूब लूटा। समारोह में उपस्थित प्रतिभागियों ने विभिन्न खेलों के ज़रिये उनके अपने इश्क़ से जुड़े अहसास एवं अनुभवों को याद किया और उन हसीन, खट्टे-मीठे पलों को हमसे साझा किया। यह कार्यक्रम हमारी सामुदायिक एवं अन्य संस्थानों से पहुंच बढ़ाने का एक बेहतरीन माध्यम बना।
इसी तरह मोहल्ला रेडियो बूथ (ON AIR - पॉडकास्ट) ने अपने शानदार अंदाज़ से सभी लोगों को अपनी और आकर्षित किया जिसमे सभी ने कहीं प्यार भरे तो कहीं दर्द भरे लम्हों को याद किया तथा कुछ प्रतिभागियों ने अपने मनपसंद गीत भी गुनगुनाए। हमें इस दौरान काफी रंगीन, हसीन एवं मज़ेदार प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुई।
इसके अलावा सभी प्रतिभागियों को "कैनवस चार्ट" (लम्बा और सुंदर पेंटिंग पेपर) पर चित्र निकालने के लिए प्रेरित किया जिससे कला की एक अलग झलक देखने को मिली। इस समारोह से समुदायिक एवं अन्य लोगों के हुनर और खूबियों को जानने का मौका मिला, जो कि बेहद मज़ेदार था।

प्रभाव

- लगातार **5** दिन सोशल मीडिया पर समारोह से संबंधित स्टोरीज़ और पोस्ट्स जाते रहने की वजह से पहुँच (**आउटरीच**) में कमाल की बढ़ोतरी हुई।
- इस समारोह में प्रत्यक्ष तौर पर 500 और अप्रत्यक्ष तौर पर लगभग 1000 से भी अधिक प्रतिभागियों की सहभागिता मिली।
- पॉडकास्ट बूथ पर **36** से भी अधिक मात्रा में प्रतिक्रियाएं एवं सहभागिता प्राप्त हुई।
- विभिन्न संस्थानों से नेटवर्किंग करने का एक सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ ।
- यह समारोह छिपे और छुपायें हुए हुनर और कलाओं को प्रदर्शित करने का बेहतर माध्यम बना।

तोड़ी बंदिशें: अर्तराष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम 2024
टैलेंट को चैलेंज: महिलाओं के हुनर एवं क्षमताओं का सार्वजनिक क्षेत्र में सम्मान

इस साल हमने महिलाओं के भीतर छुपे अविश्वसनीय एवं आश्चर्यजनक हुनरों और कौशलों के प्रशंसा हेतु 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' को काफी निराले अंदाज़ से मनाया। यह समारोह को कुल 10 दिनों तक मनाया गया, जिसमें 'टैलेंट को चैलेंज' इस थीम के तहत हमने महिला दिवस के उपलक्ष्य में समापन हेतु 'स्कूटी रैली' का नियोजन किया।

इस अभियान में किस प्रकार महिलाएं पितृसत्तात्मक समाज में काफी कठिनाइयों से विभिन्न कौशल सीखकर कामयाबी की तरफ़ आगे बढ़ रही हैं, और उन्हें इस बीच किन बाधाओं का सामना करना पड़ता है यह जानना उद्देश्य था। स्कूटी रैली के ज़रिये रैली में शामिल महिलाओं एवं लड़कियों को उनमें मौजूद प्रतिभाओं एवं योग्यताओं को आत्मविश्वास के साथ सार्वजनिक जगहों पर प्रदर्शित करने का अवसर मिला। स्कूटी रैली की शुरुआत बेगम हज़रत महल पार्क से होकर स्मृति उपवन पार्क (डालीगंज) में समाप्त हुई।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में रूबीना खातून (सामाजिक कार्यकर्ता), सौम्या चौहान (कंटेंट राइटर), नग़मा परवीन (सनतकदा मैनेजर), ललिता गौतम (ई-रिक्शा ड्राईवर) बुशरा सिद्दीकी (फिल्म मेकर), अनन्या (विज्ञान फाउंडेशन), शिखा अग्रवाल (सार्थक संस्था से) आदि अथितियों ने कार्यक्रम में अपनी सहभागिता देकर स्कूटी रैली को सफ़ल बनाया।

इस दौरान महिलाओं से खुलीं चर्चाएँ की गईं जिसके अंर्तगत महिलाओं के हुनरों और कौशलों को देखने का सामाजिक नज़रिया हमने उनके अपने लफ़्ज़ों एवं अनुभवों से समझना चाहा। चर्चा के उपरांत सार्वजनिक स्थलों पर महिलाओं को किस तरह की तकलीफ़, अपमान, मज़ाक और मुसीबतों से रोज़ाना जूझना पड़ता है यह जाना। हर रोज़ आत्मसम्मान पर ठेस लगते हुए भी हिम्मत से आज़ादी को चुनने का जज़्बा देखने को मिला।

हमने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस को केवल एक विशेष दिन की तरह नहीं बल्कि एक अभियान की तरह मनाया। लखनऊ के विभिन्न बस्तियों/मोहल्लों में चलतें 'मंचों' एवं 'कम्युनिटी सेंटरों' में मनोरंजक गतिविधियों और खेलों (फिल्मिस्तान, म्यूजिकल चेयर, खो-खो, नुक्कड़ नाटक, रैंप वॉक, नृत्य-गीत, मिमिक्री, आदि) द्वारा महिलाओं के विभिन्न 'टैलेंट्स' को चैलेंज' देकर किया और साथ ही महिला दिवस के महत्व, विशेषताओं का प्रसार भी किया। इन दिनों महिलाओं के ऐतिहासिक संघर्षों को याद किया गया साथ ही महिलाओं को अपनीं 'स्त्री' 'महिला' इस पहचान पर गर्व महसूस करवाने में हम सक्षम रहें।

कार्यक्रम के तहत हमें लगभग 300 से अधिक लोगों तक पहुंच बनाने में सफ़लता मिली।

विभिन्न आयोजनों और अभियानों के माध्यम से हम 8 प्रिंट मीडिया (राज्य स्तरीय) तक पहुंच बनाने में सक्षम रहे।

सार्वजनिक स्थलों पर महिलाओं के प्रति हिंसा रोकने के लिए साइलेंट वॉक

लखनऊ। मानवाधिकार दिवस पर आइनाक्स माल से शीरोज़ कैफे तक साइलेंट वॉक आयोजित किया गया। अभियान का शीर्षक 'तोड़ी बंदिशें-मेरी भी जगह' (सार्वजनिक स्थलों पर महिलाओं-लड़कियों के साथ होने वाली हिंसा) था। सद्भावना ट्रस्ट के 16 दिवसीय अभियान के समापन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में विनोद यादव (1090 महिला एवं बाल सुरक्षा कार्यालय), शोभा (1090 कार्यालय), मोहम्मद अली साहिल (पुलिस निरीक्षक अधिकारी), जया (शीरोज़ कैफे) और अतिथि के रूप में प्रशांत चौबे (थियटर आर्टिस्ट), अनुष्का चतुर्वेदी, उज़मा सोशल एक्टिविस्ट, श्वेता पवार

टीम की क्षमता एवं कौशल विकास

हम (टीम) समुदाय से ही हैं। लम्बे संघर्षो के बाद उन हालातों से उभरकर आज समुदाय में बदलाव की अपेक्षा रखते हुए ऊर्जा-उत्साह से कार्य कर रहे हैं, इसलिए समुदायों के सशक्तिकरण के साथ-साथ हम हमारे कौशलों और क्षमताओं के निरीक्षण की ज़रूरत को समझते हैं।

साथियों के क्षमता एवं कौशल विकास पर विशेष महत्त्व देते हैं। हम हमेशा अलग-अलग नियोजनों एवं प्रयोगों के ज़रिए सारे प्रयासों को हक़ीक़त में लाते हैं।

इसी के साथ हम साथियों के बेहतर मानसिक स्वास्थ्य की अपेक्षा करते हैं एवं बेहतर स्वास्थ्य रखने के प्रयासों पर विशेष ध्यान देते हैं।

इस सम्पूर्ण वर्ष में हमने टीम की क्षमताओं और कौशलों को बढ़ावा देने हेतु अलग-अलग संस्थाओं से सीखने-सिखाने के सिलसिले पर अधिक्तर कार्य किया।

"क्रिया संस्था" द्वारा बेंगलुरु में आयोजित मेंटरिंग ट्रेनिंग में भागीदारी

नेपाल में आयोजित SAYWLM प्रोग्राम के समापन में भागीदारी

"साकार" संस्था में डिजिटल लीडरशिप ट्रेनिंग देने का अवसर

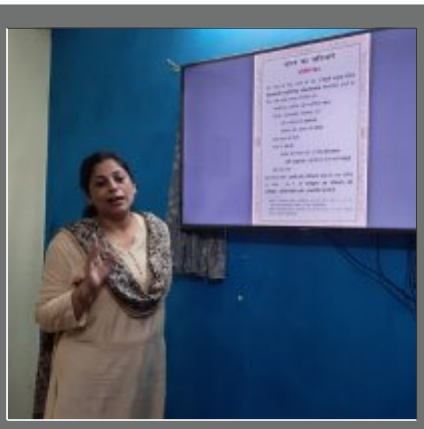

"वी द पीपल फाउंडेशन" द्वारा संविधान साक्षरता और जागरूकता पर टीम के लिए ट्रेनिंग का आयोजन

"अमर कथा" संघर्षशील महिलाओं के जज़्बे और पहचान पर आधारित कार्यक्रम में भागीदारी

"दसरा" द्वारा आयोजित लन्दन में इण्डियन फिलैंथ्रोपी फोरम में भागीदारी

"निरंतर ट्रस्ट" 30 वीं वर्षगाठ सम्मेलन में भागीदारी

"विज्ञान फाउंडेशन" में कार्टून वर्कशॉप ट्रेनिंग देने का अवसर

←——प्रभाव——→

संस्थागत प्रभाव

नेटवर्किंग - क्षमता एवं कौशल वर्धन द्वारा साथियों ने नेटवर्किंग करना सीखा। हम न केवल जिला बल्कि राज्यीय, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय पहुँच और प्रशासनिक पहुँच बनाने में सफ़ल रहे ।

आत्मविश्वास में बढ़ोतरी - वर्ष में क्षमता एवं कौशल विकास की कार्यशालाओं एवं पाठ्यक्रमों के माध्यम से बहुत सारी गतिविधियाँ सीखी और उन सीखे कौशलों को हम समुदाय तक प्रत्यक्ष रूप में ले जा सकें।

स्वास्थ्य बेहतरी पर लक्ष्य - हमने पूरे वर्ष में एक-दूसरे के स्वास्थ्य बेहतरी (मानसिक एवं शारीरिक) पर ज़्यादातर ज़ोर दिया, जैसे फिल्मिस्तान नियोजन (जहाँ सभी साथी मिलकर फिल्म देखते हैं), वर्षभर के सभी त्योहारों एवं विशेष दिनों को रोमांचक तरीकों से मनाया।

सहयोग - हम हमारे आकर्षक कार्यो से 2 विश्वविद्यालयों को प्रभावित करने में सफ़ल रहें और इस द्वारा उनके छात्रों को फेलो/इंटर्न के रूप में संस्था में शामिल करने की हमे उपलब्धि मिली।

व्यक्तिगत प्रभाव

एक जागरूक नागरिक बनने में मदद - विभिन्न नियोजनों, कार्यक्रमों और पाठ्यक्रमों के द्वारा एक जानकार एवं जागरूक नागरिक बनते है और लोकतंत्र के महत्व को हमारे कार्य और जीवन में आत्मसात करना सीख पायें हैं।

आत्मविश्वास में बढ़ोतरी - व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक स्तर पर विचारों को आकर्षक तरीकों से प्रस्तुत करके समस्या निवारण एवं सफ़लता की ओर बढ़ने का आत्मविश्वास पाया है।

कौशल एवं क्षमता विकास- भविष्य में ज़रूरी कौशलों और क्षमताओं का विकास संस्था चलित कार्यक्रम, पाठ्यक्रम और समारोह का हिस्सा बनकर हुआ है।

साझेदारी, सहयोग और मित्रता- व्यक्तिगत रूप से साझेदारी एवं सहयोग करने के शानदार कौशल को सीखते हैं, साथ ही इन कौशलों का इस्तेमाल नारीवादी मित्रता को बढ़ाने में बख़ूबी किया है।

सामुदायिक प्रभाव

शिक्षा का महत्त्व - हमारे कार्यक्रमों एवं मंच से जुड़ी किशोरियां एवं महिलाएं शिक्षा के महत्व और ज़रूरत को भलीभांति समझती है।

आत्मविश्वास में बढ़ोतरी - किशोरियों/महिलाओं ने आत्मविश्वास के साथ सामाजिक एवं पारिवारिक स्तर पर उनकें विचारों को आकर्षक तरीकों से सामने रखकर समस्या से निपटने का कौशल सीखा है।

सामाजिक, संवैधानिक एवं क़ानूनी मुद्दों की समझ बढ़ी- नज़रिया निर्माण कार्यशाला के माध्यम से सहमती, पहचान, जेंडर, यौनिकता, हिंसा मानसिक स्वास्थ्य, हक़, वर्तमान में उभरते नए मुद्दों पर समुदाय में गहरी समझ का प्रसार तेज़ी से किया है। ज़बरन शादी, बालविवाह, हिंसा आदि मुद्दों पर निडरता से आवाज़ उठाना सीखा हैं।

सामाजिक कार्य में रूचि निर्माण - मंच एवं कार्यक्रमों से निकली लड़कियां फ़ील्ड वर्क, लीडरशिप, ओनरशिप इन संकल्पनाओं को प्रयोग में ला पायी हैं।

चुनौतियाँ

समुदाय की महिलाओं को क़ानूनी सुरक्षा एवं मदद प्रदान करना यह हमारा अहम कार्य है, किन्तु लम्बी क़ानूनी प्रक्रिया के चलते महिलाओं को हताशा एवं निराशा मिलती है, इसलिए वे हमे असक्षम मानती हैं। **5 %**

हमारा कार्य असुरक्षित समुदायों के साथ होने के कारण हमेशा लोगों का विकल्पों के अभाव में स्थलांतर होना सामान्य है और हमारे चिंता का विषय है। इन हालातों में उनके मानसिक स्वास्थ्य में स्थिरता प्रदानता एवं उनकी अपेक्षाओं की पूर्ति में हम असक्षम महसूस करते हैं। **5 %**

समुदाय के लोग अपनी बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करने हेतु लगातार प्रयास करते हैं। इस वजह से उन्हें हमसे लगातार जुड़ाव रखने में काफी विपदाओं (समय प्रबंधन, रोज़गार विकल्प, आदि) को संभालना पड़ता है। **20 %**

हम संसाधनों (मानवीय, वित्तीय, तकनीकी,आदि) की कमी महसूस करतें हैं, जिन वजहों से हमें समुदाय के लिए सक्रियता पूर्वक कार्य करने में विभिन्न बाधाओं का सामना करना पड़ता है। **30 %**

हमें खासकर कोरोना महामारी के उपरांत समुदाय वित्तीय रूप से हमेशा हताश दिखाई दिया है। हम एक संस्था होते हुए हमें हमारें कार्यो और सहायता प्रदानता में वित्तीय मर्यादाओं और कमियों की अनुभूति होती है, इस वजह से हम उनके मुताबिक उनकीं ज़रूरतों (रोज़गार, शिक्षा और वित्तीय सहायता) को पूरा करने में अक्सर असफ़ल होते हैं। **40 %**

सहयोगी साथी संस्था- दसरा फाउंडेशन, अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन

वित्तीय वर्ष 2023-24 में संस्था द्वारा किए गए मुख्य कार्य

संस्थागत मुख्य कार्य

ट्रस्ट बोर्ड मीटिंग

सस्था द्वारा नियमित रूप से वर्ष में दो बार ट्रस्ट सदस्यों के साथ बैठक की गयी। प्रत्येक बैठक में ट्रस्ट सदस्यों को कार्यकर्ताओं द्वारा संस्था चलित कार्यों की विस्तृत जानकारी से परिचित कराया गया। जैसे- संस्थागत उतार-चढ़ाव, वित्तीय प्रबंधन, कार्यकर्ताओं की क्षमता, कार्यक्रम का मूल्य, लीगल दस्तावेज़ीकरण, समुदाय की ज़रूरत और नए डोनर तक पहुँच बनाने की रणनीति।

यौन उत्पीड़न निषेध समिति बैठक (IC कमिटी)

"कार्य स्थल पर होने वाली यौन हिंसा अधिनियम 2013" के अंतर्गत क़ानूनी पैरवी करने हेतु ऑनलाइन बैठक (वर्ष में दो बार) हुईं। संस्था के पास यौन उत्पीड़न से संबंधित कोई केस संज्ञान में नहीं आया है। इस वर्ष संस्था द्वारा संचालित सभी सामुदायिक कार्यक्रमों में 'कार्य स्थल पर होने वाली हिंसा' के साथ 'सार्वजनिक स्थलों पर होने वाली हिंसा' के विषय में भी चर्चाएँ हुईं। साथ ही हिंसाओं के मुद्दों पर संस्था के प्रत्येक कार्य क्षेत्र में अभियान चलाये गए। अभियानों के ज़रिए समुदाय में कार्य स्थल एवं सार्वजनिक स्थल पर होने वाली यौन हिंसा के मुद्दों पर महिलाओं एवं लड़कियों में जानकारी प्रसारित की गईं।

कार्यक्रम मूल्यांकन

वर्ष में हर 3-6 महीनों में संस्था में चल रहे प्रत्येक कार्यक्रम का मूल्यांकन नियमित रूप से किया गया। मूल्यांकन के ज़रिये कार्यकर्ताओं के साथ कार्यक्रम की चुनौतियों एवं प्रभावों पर गहरी चर्चाएँ हुईं। साथ ही कार्यक्रम की बेहतरी पर ठोस कदम लिए गए।

व्यक्तिगत स्टाफ़ मूल्यांकन

संस्था के कार्यकर्ताओं का मूल्यांकन (वर्ष में एक बार) नियमित रूप से किया गया, जहाँ उनकी क्षमता, कार्य, मानसिकता, अपेक्षा, और सिद्धान्तों को समझा गया। मूल्यांकन के उपरांत कार्यकर्ताओं को व्यक्तिगत एवं कार्य सम्बंधित सकारात्मक सुझाव दिए गए जिससे वे भविष्य में और भी बेहतर कार्य कर सकें और आगे बढ़ सकें।

मासिक एवं साप्ताहिक बैठक

वर्ष में नियमित रूप से संस्था में मासिक और साप्ताहिक बैठकों का (ऑनलाइन-ऑफ़लाइन) संचालन हुआ है।

साप्ताहिक बैठक में टीम अपने एक सप्ताह का काम और प्लान साझा करते हैं। और मासिक बैठक में टीम के साथी अपने पूरे माह का काम, सीख, अनुभव, चुनौती और अगले माह में होने वाले कार्यक्रम का प्लान एवं रणनीतियाँ प्रस्तुत करते हैं। साथ ही प्रति माह ट्रस्टी के साथ बैठक हुई जो खासकर प्रोग्राम और फाइनेंस मैनेजमेंट का सुपरविज़न और मेंटरिंग करते हैं।

हमसे मिलिए

सद्भावना टीम एक समूह है जिसकी जड़े काफी मजबूत हैं। हम में से ज़्यादातर लोग समुदाय से उभरे हुए लीडर्स हैं जो मौजूदा आर्थिक- सामाजिक मुद्दों पर पकड़ रखते हैं।सभी ने अपनी एक पहचान समुदाय से लेकर संस्थाओं में स्थापित की है जिसे ज़रिये वह एक समावेशी समाज निर्माण के सपने को साकार करने की कोशिश कर रहे हैं।

उज़मा
जूनियर अकाउंटेंट / एडमिन

ज़रीना
एडमिन सहयोगी

हमीदा खातून
फील्ड प्रोग्राम डायरेक्टर

श्वेता
सेंटर संचालक

समरीन
प्रोजेक्ट फैसिलिटेटर (गर्ल्स कार्यक्रम)

ज़ोया
सेंटर संचालक

आमरा क़मर
फील्ड प्रोग्राम मैनेजर

खुशनुमा
मोबिलाइज़र (गर्ल्स कार्यक्रम)

समरीन
फील्ड कंसल्टेंट

रेखा
प्रोग्राम कॉर्डिनेटर (महिला कार्यक्रम)

मरियम
फील्ड प्रोग्राम कॉर्डिनेटर (गर्ल्स फोरम)

रुचिका शारदा
फाइनेंस कॉर्डिनेटर

फिरदौस
प्रोजेक्ट फैसिलिटेटर (गर्ल्स फोरम)

ख़ुशी
कंसल्टेंट

तबस्सुम
कंसल्टेंट

हमने एकीकृत दृष्टिकोण और लक्ष्य की दिशा में मज़बूत कदम उठाए हैं।

"एक टीम, एक सद्भावना"

आइये, लखनऊ में हमारे कार्य का दौरा कीजिए।

हमारे कार्य में रूचि रखने वाले सभी को हमारी ओर से खुला निमंत्रण है , कृपया आएं और हमें विज़िट करें।

हमसे संपर्क कीजिये

@sadbhavanatrust.lucknow

@lucknowleaders

@sadbhavna.trust

SADBHAVNA TRUST

@sadbhavanatrust

@sadbhavnatrust

https://sadbhavanatrust.com

sadbhavanalko12@gmail.com

Head Office -South Delhi, India

Address: Flat No.-201, Second Floor,
Neta Ji Subhash Chandra Bose Complex,
Tulsidas Marg, Chowk, Lucknow

https://sadbhavanatrust.com

0522-4077-697